अबाधाकाल के थोकड़े सम्बन्धी ज्ञातव्य :-

1. **अबाधाकाल** - कर्म बंधने के बाद अमुक समय तक किसी भी प्रकार के फल न देने की अवस्था को अबाधाकाल कहते हैं। आयु कर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों में यह सामान्य नियम है कि मिथ्यात्व मोहनीय के बन्ध के आधार से अन्य कर्म व उनकी प्रकृतियों का बन्ध होता है। मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति का बंध होने पर आयु को छोड़कर शेष सभी कर्मों का भी उत्कृष्ट स्थिति बंध होता है तथा ज्ञानावरणीय आदि छः कर्मों में से किसी एक की उत्कृष्ट स्थिति बंधने पर मोहनीय कर्म आदि शेष कर्मों की स्थिति उत्कृष्ट बंधने की भजना है।
2. मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का एकेन्द्रिय 1 सागर का, बेइन्द्रिय 25 सागर का, तेइन्द्रिय 50 सागर का, चौरेन्द्रिय 100 सागर का, असंज्ञी पंचेन्द्रिय 1000 सागर का तथा सन्नी पंचेन्द्रिय 70 कोटाकोटि सागरोपम का उत्कृष्ट बन्ध करते हैं।
3. एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय तक में जघन्य व उत्कृष्ट बन्ध में पल्योपम के असंख्यातवें भाग का अन्तर रहता है। अर्थात् जघन्य बन्ध, उत्कृष्ट बन्ध की अपेक्षा पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम होता है।
4. सात कर्मों में प्रकृतियों के स्थिति बन्ध को समझने का आसान तरीका यह है कि- जिस प्रकृति का जितना उत्कृष्ट बन्ध है, उसमें मिथ्यात्व मोहनीय की उत्कृष्ट स्थिति का भाग देने पर जो स्थिति आती है, वही उसका उत्कृष्ट स्थिति बन्ध है। जैसे- एकेन्द्रिय जीव में ज्ञानावरणीय कर्म का स्थिति बन्ध जानना है तो ज्ञानावरणीय की उत्कृष्ट स्थिति 30 कोटाकोटि सागर में मिथ्यात्व मोहनीय की उत्कृष्ट स्थिति 70 कोटाकोटि सागर का भाग देने पर 30/70 अर्थात् 3/7 भाग आता है। एकेन्द्रिय 1 सागर के अनुपात में कर्म बांधेगा अतः यह कहा जा सकता है कि 1 सागर का 3/7 भाग उत्कृष्ट स्थिति का बन्ध करता है। बेइन्द्रिय 25 सागर का 3/7 भाग, तेइन्द्रिय 50 सागर का 3/7 भाग, चौरेन्द्रिय 100 सागर का 3/7 भाग, असंज्ञी पंचेन्द्रिय 1000 सागर का 3/7 भाग उत्कृष्ट स्थिति बांधते हैं। इन सभी में जघन्य स्थिति अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम की बंधती है। इसी प्रकार से सात कर्मों की स्थितियों का बन्ध जाना जा सकता है।
5. सन्नी पंचेन्द्रिय में सात कर्मों के स्थिति बन्ध के बारे में इतना जानना चाहिए कि दूसरे से लेकर आठवें गुणस्थान तक जो भी कर्म-प्रकृतियों का बन्ध करते हैं, वे अन्तःकोटाकोटि सागरोपम की बांधते हैं। पहले गुणस्थानवर्ती सन्नी जीव कम से कम अन्तः कोटाकोटि सागर की तथा उत्कृष्ट अपने अपने कर्म की उत्कृष्ट स्थिति का बन्ध करते हैं।
6. सन्नी मनुष्य में यह विशेषता है कि वह चौदह ही गुणस्थानों को प्राप्त कर सकता है। अतः नवें-दसवें गुणस्थान में बन्ध-विच्छेद को प्राप्त होने वाली प्रकृतियों का जघन्य स्थिति बन्ध सन्नी मनुष्य ही करता है।
7. सन्नी मनुष्य में भी जो क्षपक श्रेणि पर आरूढ़ होते हैं, वे संज्वलन चौक, पुरुषवेद, 5 ज्ञानावरणीय, 4 दर्शनावरणीय, 5 अन्तराय, साता वेदनीय (साम्परायिक), उच्च गोत्र, यशकीर्ति, इन 22 प्रकृतियों का जघन्य स्थिति बन्ध इन प्रकृतियों के बन्ध-विच्छेद के समय में करते हैं।

   अर्थात् संज्वलन चौक व पुरुषवेद इन पाँच का नवें गुणस्थान में तथा शेष 17 प्रकृतियों का दसवें गुण के चरम समय में जघन्य स्थिति बन्ध होता है।
8. सात कर्मों में यह एक सामान्य नियम है कि उत्कृष्ट स्थिति का बन्ध संक्लिष्ट परिणामों में होता है तथा जघन्य स्थिति का बन्ध विशुद्ध परिणामों में होता है, किन्तु तिर्यंचायु, मनुष्यायु व देवायु इन तीन प्रकृतियों में यह नियम है कि इनकी उत्कृष्ट स्थिति विशुद्ध परिणामों में ही बन्धती है।

9. एक ही कर्म की जो प्रकृतियाँ अशुभ हैं उनकी स्थिति अधिक होती हैं तथा जो प्रकृतियाँ शुभ होती हैं, उनकी स्थिति कम होती है। जैसे- असातावेदनीय की स्थिति 30 कोटाकोटि सागर की तथा सातावेदनीय की 15 कोटाकोटि सागर की होती है। नीच गोत्र की 20 कोटाकोटि सागर की तथा उच्च गोत्र की 10 कोटाकोटि सागर की होती है। नपुंसक वेद की 20, स्त्रीवेद की 15 तथा पुरुषवेद की 10 कोटाकोटि सागर की उत्कृष्ट स्थिति होती है।

10. यदि 1 कोटाकोटि सागर प्रमाण बन्ध होता है तो उसका अबाधाकाल 100 वर्ष का माना जाता है। इसी अनुपात से सात कर्मों के स्थिति बन्ध में अबाधाकाल होता है। जैसे-

- 1 कोटाकोटि सागरोपम की स्थिति पर 100 वर्ष के अबाधाकाल के नियम के आधार से गणना करने पर 9, 25, 92, 592 . 64/108 सागरोपम (नौ करोड़, पच्चीस लाख, बानवें हजार पाँच सौ बानवें सागरोपम तथा एक सौ आठिया चौसठ भाग) की स्थिति होने पर 1 मूहूर्त्त का अबाधाकाल।
- एक दिन में 30 मुहूर्त्त, एक वर्ष में 360X30=10,800 मुहूर्त्त तथा 100 वर्षों में 10,800X100=10,80,000 मुहूर्त होते हैं। एक कोटा कोटि की स्थिति में 10,80,000 मुहूर्त्त का भाग देने पर 9,25,92,592 . 64/108 की संख्या आती है।
- 5.5 सागरोपम (साढ़े पाँच सागरोपम) की स्थिति होने पर 1 आवलिका का अबाधाकाल होता है। इससे कम स्थिति बंध होने पर अबाधाकाल अन्तर्मुहूर्त्त ही होता है। अतः एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय द्वारा बांधे जाने वाले सभी सातों कर्मों का अबाधाकाल जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त्त व उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त्त ही रहेगा।

10 कोटाकोटि सागर का बन्ध होने पर	1000 वर्ष अबाधाकाल
15 कोटाकोटि सागर का बन्ध होने पर	1500 वर्ष अबाधाकाल
20 कोटाकोटि सागर का बन्ध होने पर	2000 वर्ष अबाधाकाल
40 कोटाकोटि सागर का बन्ध होने पर	4000 वर्ष अबाधाकाल
70 कोटाकोटि सागर का बन्ध होने पर	7000 वर्ष अबाधाकाल

अर्थात् यह अबाधाकाल कर्म-बन्ध की स्थिति से निश्चित् अनुपात रखता है। कर्मों की स्थिति का अपवर्तन होने पर अबाधा का भी अपवर्तन हो जाता है। 7 हजार वर्ष का उत्कृष्ट अबाधाकाल अपवर्तित स्थिति के अनुपात से अन्तर्मुहूर्त्त तक भी रह सकता है।

11. **मिश्र मोहनीय-सम्यक्त्व मोहनीय का बन्ध नहीं** - समवायांग सूत्र के 25वें समवाय में विकलेन्द्रिय प्रायोग्य नाम कर्म की 25 उत्तरप्रकृतियों का बन्ध बतलाया, वहीं 28 वें समवाय में देव प्रायोग्य 28 प्रकृति व नरक प्रायोग्य 28 प्रकृति का बन्ध बतलाया।

29वें समवाय में तीर्थंकर नामकर्म सहित देव प्रायोग्य 29 प्रकृतियों का बन्ध बतलाया गया। जिनमें 5 बन्धन, 5 संघातन व वर्णादि के 16 भेद, इस प्रकार कुल 26 प्रकृतियों का बन्ध नहीं गिनाया गया जो दूसरे कर्मग्रन्थ के बन्ध-स्वामित्व के अनुरूप ही है।

26वें समवाय में अभवी जीव के मोहनीय कर्म की 26 प्रकृतियों की सत्ता और 27वें समवाय में उपरम वेदक (समकित मोहनीय की उद्वेलना हो जाने पर) के 27 की सत्ता बतलाई गई है। इससे यही फलित होता है कि समुच्चय 120 प्रकृति के बन्ध के विषय में आगम और कर्मग्रन्थ दोनों का दृष्टिकोण समान है।

5वें कर्मग्रन्थ के जघन्य-उत्कृष्ट अनुभाग बन्ध के स्वामित्व से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि नाम कर्म की 26 प्रकृतियों का बन्ध होने पर भी 5 बन्धन, 5 संघातन को शरीर के अन्तर्गत और वर्णादि 20 भेदों को समुच्चय वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श के अन्तर्गत कह दिया गया, पर इनका बन्ध होता है। कर्मग्रन्थ, सैद्धान्तिक अभिप्राय (विशेषावश्यक भाष्य, बृहत्कल्प भाष्य, हारिभद्रीय तथा मलयगिरी की आवश्यक सूत्र की टीकाएँ) ने समवेत स्वर में पहले गुणस्थान में मिथ्यात्व मोहनीय के तीन पुंज होने पर ही मिश्र मोहनीय और समकित मोहनीय की सत्ता प्राप्त होना बतलाया है। अबाधाकाल के इस थोकड़े में केवल उदयकाल की अपेक्षा इनकी स्थिति समझनी चाहिए, वरना तो सन्नी पंचेन्द्रिय जीव के 8 वें गुणस्थान तक 4 आयु को छोड़कर 144 प्रकृतियों में से किसी भी प्रकृति की सत्ता अन्तः कोटाकोटि सागरोपम से कम की संभव ही नहीं है।

आगम, कर्म सिद्धान्त के अनुरूप निम्न तथ्य प्रकट होते हैं-

A. दर्शन मोहनीय की तीनों प्रकृति कांक्षा मोहनीय के नाम से कही जाती है।
भगवती 1/3

B. इनमें से मात्र मिथ्यात्व मोहनीय का बन्ध 24 ही दण्डकों के जीव पहले गुणस्थान में करते हैं। जबकि इसका उदय साधु अर्थात् छठे-सातवें गुणस्थान तक भी बताया गया है।

C. 16 दण्डक सन्नी पंचेन्द्रिय- तीन करण करता हुआ पहली बार समकित को (सैद्धान्तिक अभिप्राय से क्षयोपशम समकित) प्राप्त करता हुआ मिथ्यात्व के तीन पुंज कर मिश्र मोहनीय और समकित मोहनीय की स्थिति अन्तःकोटाकोटि सागरोपम की ही सर्जित करता है।

D. क्षयोपशम सम्यक्दृष्टि 66 सागरोपम झाझेरी तक निरन्तर समकित मोहनीय का वेदन कर सकता है, जबकि तीसरे गुणस्थान की स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त होने से मिश्र मोहनीय का उदयकाल अन्तर्मुहूर्त्त से अधिक नहीं हो सकता। यहाँ इसी उदयकाल की अपेक्षा से स्थिति बतलाई गई है।

12. पाँच वर्ण तथा 5 रस नाम कर्म की प्रकृतियों की स्थिति में अशुभ की स्थिति 20 कोटाकोटि सागरोपम की तथा क्रमशः ढाई-ढाई कोटाकोटि कम करते-करते अन्तिम शुभ की स्थिति 10 कोटाकोटि सागरोपम की होती है। याद करने में सुविधा रहे, इसलिए 20 तथा 70 सागरोपम इन दोनों उत्कृष्ट स्थिति को ढाई-ढाई से भाग देने पर जो संख्या आती है, वह सागरोपम के साथ बोली जाती है। जैसे-

20/70 को ढाई से विभाजित करने पर 8/28

17.5/70 को ढाई से विभाजित करने पर 7/28

15/70 को ढाई से विभाजित करने पर 6/28

12.5/70 को ढाई से विभाजित करने पर 5/28

10/70 को ढाई से विभाजित करने पर 4/28

इसीलिए एकेन्द्रिय में 1 सागरोपम का 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग उत्कृष्ट स्थिति बन्ध कहा जाता है।

13. इसी प्रकार छह संहनन व छह संस्थान में उत्कृष्ट स्थिति में दो-दो की वृद्धि करते हुए बतलाई गई है। जैसे- दस, बारह, चौदह, सोलह, अठारह और बीस कोटाकोटि सागरोपम की बतलायी है। इसे मोहनीय की उत्कृष्ट स्थिति से विभाजित करने पर 10/70, 12/70, 14/70, 16/70, 18/70, 20/70 बनती है। याद करने में व बोलने में सुविधा रहे, इस दृष्टि से उक्त स्थिति को दो-दो से विभाजित करने पर क्रमशः 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35 और 10/35 कही जाती है। फिर इसे एकेन्द्रियादि में उनके सागरोपम के अनुपात में बतलायी जाती है।
14. आयु कर्म के सम्बन्ध में अनेक विविधताएँ हैं-
    - A. यह कर्म जीवन में एक ही बार बंधता है। अति जघन्य परिणामों में आयु का बन्ध नहीं होता तो अति विशुद्ध परिणामों में भी आयु का बन्ध नहीं होता। इन दोनों के मध्य में स्थित परिवर्तमान मध्यम परिणाम (घोलमान परिणाम) में आयु का बंध होता है।
    - B. नारकी, देवता, युगलिक में 6 मास आयु शेष रहने पर तथा निरुपक्रमी मनुष्य-तिर्यंचों में वर्तमान भव की 1/3 भाग आयु शेष रहने पर बन्धता है।
    - C. मनुष्य-तिर्यंच में सोपक्रमी आयुष्य वालों में अपनी आयु का तीसरा भाग शेष रहने पर अथवा नवाँ भाग, अथवा सत्ताईसवाँ भाग, अथवा इक्यासीवां भाग अथवा 243 वाँ भाग अथवा 729 वाँ भाग शेष रहने पर अथवा अन्तर्मुहूर्त्त आयु शेष रहने पर आयु बन्धता है।
    - D. चरमशरीरी जीव को छोड़कर कोई भी जीव आयुष्य कर्म का बन्ध किये बिना मरण को प्राप्त नहीं होता है।
    - E. अपर्याप्त अवस्था में मरने वाले जीव भी कम से कम तीन पर्याप्ति पूर्ण करने के बाद ही आयुष्य बांधते हैं। आयुष्य बांधने के अन्तर्मुहूर्त्त बाद ही काल करते हैं।
    - F. आयुष्य बन्ध करने में अन्तर्मुहूर्त्त काल लगता है।
15. आयु कर्म में अबाधाकाल होता है अथवा नहीं? इसके सम्बन्ध में निम्नांकित तथ्य जानने योग्य हैं :-
    - A. आयु कर्म के बन्ध, उदय, उदीरणा आदि में अनेक विशेषताएँ होती हैं। ठीक इसी आधार पर भगवती शतक 6 उद्देशक 3, पन्नवणा पद-23, उद्देशक 2 में आयुष्य कर्म के लिए निश्चित् नियमों के आधार पर होने वाली अबाधा का निषेध किया गया है।
    - B. उत्तराध्ययन सूत्र अ. 33 में उसी आयुष्य कर्म की स्थिति नारकी-देवता की अपेक्षा उत्कृष्ट 33 सागरोपम की तथा मनुष्य-तिर्यंच की अपेक्षा जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की बतलायी है। भगवती, पन्नवणा में सकल और उत्तराध्ययन में शुद्ध आयुष्य कही गई। यदि निषेक, सकल आयु (33 सागर व क्रोड़ पूर्व का तीसरा भाग) के बराबर होता तो उत्तराध्ययन में आयुष्य कर्म की स्थिति उत्कृष्ट 33 सागर झाझेरी बताई होगी।
    - C. भगवती व पन्नवणा में आयु का अबाधाकाल क्यों नहीं बताया गया, इस विषय में समर्थ समाधान भाग-2, प्रश्न संख्या-1052, पृष्ठ संख्या-197 पर कहा है कि- आयुकर्म का अबाधाकाल जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट एक करोड़ पूर्व का तीसरा भाग तथा मृत्यु के जितने समय पहले आयु बांधे उतना ही अबाधाकाल समझ लेना चाहिए। नारकादि की जितनी आयु बताई, उससे जितनी बन्ध-स्थिति अधिक है, उतना ही अबाधाकाल स्पष्ट हो जाने से सूत्रकार ने नहीं बताया, ऐसा संभव है।

बिन्दु 10 के नियम से भी देखें तो -

5.5 सागरोपम की स्थिति बन्धने पर अबाधाकाल 1 आवलिका होता है।

6 से गुना करने पर लगभग 33 सागर की स्थिति बन्धने पर अबाधाकाल 6 आवलिका होता है।

D. सामान्य नियम की (कर्म स्थिति के अनुपात वाली 6 आवलिका की) अबाधा आयु में नहीं होती, वह तो क्रोड पूर्व के तीसरे भाग तक के बिना निषेक वाली स्थिति तक हो सकती है। जघन्य वहाँ 6 आवलिका से कम केवल अन्तर्मुहूर्त्त भी हो सकता है। 3 पल्योपम या क्रोड पूर्व की स्थिति बांधने पर वह अबाधा कतिपय समयों में सिमट जाती है, अर्थात् बंधावलिका पूर्ण होने के पूर्व ही अबाधाकाल समाप्त हो जाता है। कर्म सिद्धान्त का सामान्य नियम है बंधावलिका सकल करणों के अयोग्य है, अतः उस अबाधाकाल का यहाँ निषेध भले ही किया गया हो पर इसका अभिप्राय यह नहीं हो सकता कि अगले भव की आयु बंधते ही उसका प्रदेशोदय चालू हो जाए।

E. भगवती शतक 5 उद्देशक 3 में एक भव में दो आयु के वेदन का स्पष्ट निषेध किया गया है। भगवती शतक 1 उद्देशक 4 में वेदन दो प्रकार का बतलाया- प्रदेश कर्म का वेदन और अनुभाव कर्म का वेदन। अर्थात् प्रदेशोदय को भी वेदन कहा। अतः एक भव में दो आयु का प्रदेशोदय भी नहीं माना जा सकता।

F. कार्मग्रन्थिकों ने भी 3 पल्योपम या 33 सागरोपम की आयु की शुद्ध स्थिति से अधिक स्थिति को उदय में नहीं आने के कारण अबाधाकाल के रूप में कहा है।

कर्म प्रकृतियों के अबाधाकाल का थोकड़ा

(पन्नवणा सूत्र 23 वां पद उद्देशक 2)

(1-20) समुच्चय जीव, पाँच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाँच अन्तराय-ये चौदह प्रकृतियाँ जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की बांधता है तथा पांच निद्रा और असाता वेदनीय-ये छह प्रकृतियाँ जघन्य एक सागरोपम के सातिया तीन भाग अर्थात् 3/7 सागरोपम में पल्योपम के असंख्यातवें भाग न्यून (कम) की बांधता है। ये 20 प्रकृतियाँ उत्कृष्ट तीस कोटाकोटि (कोड़ाकोड़ी) सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल तीन हजार वर्ष का है। एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक ये प्रकृतियाँ जघन्य अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। उत्कृष्ट स्थिति एकेन्द्रिय एक सागरोपम के सातिया तीन भाग यानी (3/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय 25 सागरोपम के सातिया तीन भाग यानी (75/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय 50 सागरोपम के सातिया तीन भाग यानी (150/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय 100 सागरोपम के सातिया तीन भाग यानी (300/7) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय 1000 सागरोपम के सातिया तीन भाग यानी (3000/7) सागरोपम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय 14 प्रकृतियाँ जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की और छह प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम (एक कोड़ाकोड़ी सागरोपम से कुछ कम) की बांधता है और उत्कृष्ट तीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल तीन हजार वर्ष का है।

(21) सातावेदनीय के दो भेद- साम्परायिक और ईर्यापथिक। ईर्यापथिक सातावेदनीय की स्थिति दो समय की है। इसको समुच्चय जीव और सन्नी पंचेन्द्रिय ही बांधते हैं। साम्परायिक साता वेदनीय की समुच्चय जीव की अपेक्षा जघन्य 12 मुहूर्त्त, उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की स्थिति है, अबाधा काल 1500 वर्षों का है। एकेन्द्रिय के सातावेदनीय की जघन्य स्थिति पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3/14) सागरोपम की, उत्कृष्ट (3/14) सागरोपम की। द्वीन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति 25 सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (75/14) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय की 50 सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (150/14) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय की 100 सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (300/14) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय की एक हजार सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3000/14) सागरोपम की है। इनकी जघन्य स्थिति अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम है। संज्ञी पंचेन्द्रिय सातावेदनीय बांधे तो जघन्य स्थिति 12 मुहूर्त्त की, उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की है और अबाधाकाल 1500 वर्षों का है।

(22-24) समुच्चय जीव मिथ्यात्व मोहनीय जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम एक सागरोपम की, उत्कृष्ट 70 कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल सात हजार वर्षों का है। एकेन्द्रिय मिथ्यात्व मोहनीय प्रकृति उत्कृष्ट एक सागरोपम की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम की बांधते हैं। जघन्य सभी अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्यात्व मोहनीय प्रकृति जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की, उत्कृष्ट 70 कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल सात हजार वर्षों का है।

एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय तक मिश्र मोहनीय व सम्यक्त्व मोहनीय का उदय नहीं होता है। समुच्चय जीव और संज्ञी पंचेन्द्रिय के मिश्र मोहनीय का उदयकाल जघन्य-उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त तथा सम्यक्त्व मोहनीय का उदयकाल जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट 66 सागरोपम से कुछ अधिक का है।

(25-49) - चारित्र मोहनीय कर्म की 25 प्रकृतियाँ हैं। समुच्चय जीव अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यानी और प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ - ये बारह प्रकृतियाँ बांधे तो जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के सातिया चार भाग यानी (4/7) सागरोपम की, संज्वलन क्रोध की जघन्य दो महीने की, संज्वलन मान की जघन्य एक महीने की, संज्वलन माया की जघन्य पन्द्रह दिन (एक पक्ष) की और संज्वलन लोभ की जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की, उत्कृष्ट सोलह प्रकृतियाँ चालीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल 4000 वर्षों का है। ये 16 प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया चार भाग यानी (4/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के सातिया चार भाग यानी (100/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के सातिया चार भाग यानी (200/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के सातिया चार भाग यानी (400/7) सागरोपम की, असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया चार भाग यानी (4000/7) सागरोपम की बांधते हैं। जघन्य सभी अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय 12 प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, संज्वलन क्रोध जघन्य दो महीने का, संज्वलन मान जघन्य एक महीने का, संज्वलन माया जघन्य पन्द्रह दिन की और संज्वलन लोभ जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त का बांधता है। उत्कृष्ट सोलह प्रकृतियाँ चालीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल चार हजार वर्षों का है।

समुच्चय जीव हास्य, रति-ये दो प्रकृतियाँ जघन्य एक सागरोपम के सातिया एक भाग (1/7) में पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की और पुरुषवेद जघन्य आठ वर्ष की बांधता है। उत्कृष्ट तीनों प्रकृतियाँ दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल एक हजार वर्ष का है। एकेन्द्रिय ये तीनों प्रकृतियाँ उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (25/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (50/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (100/7) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1000/7) सागरोपम की बांधते हैं। जघन्य सभी अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय हास्य और रति जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की और पुरुषवेद जघन्य आठ वर्ष का बांधता है, उत्कृष्ट तीनों ही प्रकृतियाँ दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल एक हजार वर्ष का है।

समुच्चय जीव अरति, भय, शोक, जुगुप्सा और नपुंसक वेद- ये पाँच प्रकृतियाँ जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम एक सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2/7) सागरोपम की, उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल दो हजार वर्षों का है। एकेन्द्रिय ये पांचों प्रकृतियाँ उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (50/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (100/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (200/7) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2000/7) सागरोपम की बांधते हैं। जघन्य स्थिति सभी अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये पांचों प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल दो हजार वर्षों का है।

समुच्चय जीव स्त्रीवेद की प्रकृति जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम एक सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3/14) सागरोपम की उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल 1500 वर्षों का है। एकेन्द्रिय, स्त्री वेद की प्रकृति उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3/14) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय

पच्चीस सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (75/14) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (150/14) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (300/14) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3000/14) सागरोपम की बांधते हैं। जघन्य स्थिति सभी अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय स्त्रीवेद की प्रकृति जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल 1500 वर्षों का है।

(50-53) आयु कर्म की चार प्रकृतियाँ हैं। नैरयिक, नरक और देवता की आयु नहीं बांधता, मनुष्य और तिर्यंच की आयु बांधता है।

नरकायु और देवायु इन दो प्रकृतियों को समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य 10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक, उत्कृष्ट 33 सागरोपम तथा करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक। एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय नहीं बांधते हैं। असन्नी पंचेन्द्रिय बांधे तो जघन्य 10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक, उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग तथा करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक।

सन्नी पंचेन्द्रिय बांधे तो समुच्चय जीव की तरह कहना।

तिर्यंचायु और मनुष्यायु, समुच्चय जीव एवं सन्नी पंचेन्द्रिय बांधे तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट तीन पल्योपम तथा करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक। एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट करोड़ पूर्व और अपनी-अपनी आयुष्य का तीसरा भाग अधिक। असन्नी पंचेन्द्रिय बांधे तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग और करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक कहना। मनुष्य, यदि नरकायु और देवायु बांधता है तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त अधिक दस हजार वर्ष की, उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम करोड़ पूर्व के तीसरे भाग अधिक की बांधता है। मनुष्य यदि मनुष्यायु और तिर्यंचायु बांधता है तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की, उत्कृष्ट तीन पल्योपम तथा करोड़ पूर्व के तीसरे भाग अधिक की बांधता है।

तिर्यन्ञ्च, मनुष्य यदि नरकायु, तिर्यञ्चायु, मनुष्यायु और देवायु में से किसी भी आयु का बन्ध करें तो अबाधाकाल जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट एक करोड़ पूर्व का तीसरा भाग होता है। नारकी, देवता यदि तिर्यञ्चायु, मनुष्यायु का बन्ध करे तो अबाधाकाल छह माह का होता है।

(54-148) नाम कर्म की 93 और गोत्र कर्म की 2 प्रकृतियों का बंध। नरक गति, नरकानुपूर्वी और वैक्रिय चतुष्क (वैक्रिय शरीर, वैक्रिय अंगोपांग, वैक्रिय बन्धन, वैक्रिय संघात) ये छह प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम हजार सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2000/7) सागरोपम की उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल दो हजार वर्षों का है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव ये छह प्रकृतियाँ नहीं बांधते। असंज्ञी पंचेन्द्रिय ये छह प्रकृतियाँ जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम हजार सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2000/7) सागरोपम की उत्कृष्ट पूरे (2000/7) सागरोपम की बांधता है। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये छह प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की, उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल दो हजार वर्षों का है। देवगति, देवानुपूर्वी ये दो प्रकृतियाँ समुच्चय जीव बांधता है तो जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम हजार सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1000/7) सागरोपम की, उत्कृष्ट दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल एक हजार वर्ष का है। एकेन्द्रिय,

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय ये दो प्रकृतियाँ नहीं बांधते। असंज्ञी पंचेन्द्रिय ये दोनों प्रकृतियाँ जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम हजार सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1000/7) सागरोपम की उत्कृष्ट पूरे (1000/7) सागरोपम की बांधता है। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये दोनों प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल एक हजार वर्षों का है।

समुच्चय जीव मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी ये दो प्रकृतियाँ जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3/14) सागरोपम की, उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल पन्द्रह सौ वर्षों का है। एकेन्द्रिय जीव ये दोनों प्रकृतियाँ उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3/14) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (75/14) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (150/14) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (300/14) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3000/14) सागरोपम की बांधते हैं और जघन्य अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये दोनों प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की, उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल पन्द्रह सौ वर्षों का है।

तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क (औदारिक शरीर, औदारिक अंगोपांग, औदारिक बंधन, औदारिक संघात), तैजस त्रिक (तैजस शरीर, तैजस बंधन, तैजस संघात) कार्मण त्रिक (कार्मण शरीर, कार्मण बंधन, कार्मण संघात), चार अशुभ स्पर्श (कर्कश, भारी, शीत, रूक्ष) और दुरभिगंध, ये 19 प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2/7) सागरोपम की, उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल दो हजार वर्षों का है। ये 19 प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय उत्कृष्ट पच्चीस सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (50/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय उत्कृष्ट पचास सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (100/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय उत्कृष्ट सौ सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (200/7) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय उत्कृष्ट हजार सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2000/7) सागरोपम की बांधते हैं। ये सभी जघन्य अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये 19 प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल दो हजार वर्षों का है।

तीन विकलेन्द्रिय (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय) सूक्ष्मत्रिक (सूक्ष्म नाम, साधारण नाम, अपर्याप्त नाम) ये छह प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के पैंतीसिया नव भाग यानी (9/35) सागरोपम की उत्कृष्ट अठारह कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है। अबाधा काल अठारह सौ वर्षों का है। ये छह प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय बांधता है तो उत्कृष्ट एक सागरोपम के पैंतीसिया नव भाग यानी (9/35) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय 25 सागरोपम के पैंतीसिया नव भाग यानी (45/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय 50 सागरोपम के पैंतीसिया नव भाग यानी (90/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के पैंतीसिया नव भाग यानी (180/7) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के पैंतीसिया नव भाग यानी (1800/7) सागरोपम की बांधते है और जघन्य अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये छहों प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट अठारह कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल अठारह सौ वर्षों का है।

चार शुभ स्पर्श (कोमल, लघु, उष्ण, स्निग्ध) और सुरभिगंध ये पांच प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1/7) सागरोपम की उत्कृष्ट दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल एक हजार वर्षों का है। ये पांच प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (25/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय 50 सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (50/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (100/7) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1000/7) सागरोपम की बांधते हैं और जघन्य अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये पांचों प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल एक हजार वर्षों का है।

आहारक चतुष्क (आहारक शरीर, आहारक अंगोपांग, आहारक बंधन, आहारक संघात) और जिन नाम, ये पांच प्रकृतियाँ समुच्चय जीव और संज्ञी पंचेन्द्रिय (अप्रमत्त साधु) ही बांधे, जघन्य उत्कृष्ट अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की बांधते हैं। एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक इन पांच प्रकृतियों को बंध नहीं करते हैं।

पांच वर्ण (काला, नीला, लाल, पीला और श्वेत) पांच रस (तीखा, कड़वा, कषैला, खट्टा और मीठा) - ये दसों प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के अठाईसिया आठ भाग, सात भाग, छह भाग, पाँच भाग और चार भाग यानी (8/28), (7/28),(6/28), (5/28) और (4/28) सागरोपम की उत्कृष्ट 20 कोटाकोटि सागरोपम की, 17.5 कोटाकोटि सागरोपम की, 15 कोटाकोटि सागरोपम की, 12.5 कोटाकोटि सागरोपम की और 10 कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल क्रमशः दो हजार, साढ़े सतरह सौ, पन्द्रह सौ, साढ़े बारह सौ और एक हजार वर्षों का है।

एकेन्द्रिय ये दस प्रकृतियाँ उत्कृष्ट सागरोपम के अठाईसिया आठ भाग यावत् चार भाग की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के अठाईसिया आठ भाग यावत् चार भाग की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के अठाईसिया आठ भाग यावत् चार भाग की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के अठाईसिया आठ भाग यावत् चार भाग की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के अठाईसिया आठ भाग यावत् चार भाग की बांधते हैं और जघन्य अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये दस प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की, 17.5 कोटाकोटि सागरोपम की, 15 कोटाकोटि सागरोपम की, 12.5 कोटाकोटि सागरोपम की और दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है। अबाधा काल क्रमशः 2000 वर्षों का, 1750 वर्षों का, 1500 वर्षों का, 1250 वर्षों का और 1000 वर्षों का है।

छह संहनन और छह संस्थान ये बारह प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के पैंतीसिया पांच भाग, छह भाग, सात भाग, आठ भाग, नौ भाग और दस भाग यानी (5/35), (6/35),(7/35), (8/35) और (9/35), (10/35) सागरोपम की उत्कृष्ट 10,12,14,16,18 और 20 कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल 1000, 1200, 1400, 1600, 1800 और 2000 वर्षों का है। ये बारह प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय उत्कृष्ट सागरोपम के पैंतीसिया पांच भाग, छह भाग, सात भाग, आठ भाग, नौ भाग और दस भाग की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के पैंतीसिया पांच भाग यावत् दस भाग, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के पैंतीसिया पांच भाग यावत् दस भाग की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के पैंतीसिया पांच भाग यावत् दस भाग की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के पैंतीसिया पांच भाग यावत् दस भाग की बांधते हैं। जघन्य सब में अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की है। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये बारह प्रकृतियाँ जघन्य अन्तःकोटाकोटि सागरोपम की

उत्कृष्ट दस, बारह, चौदह, सोलह, अठारह और बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल 1000, 1200, 1400, 1600, 1800 और 2000 वर्षों का है।

सूक्ष्म त्रिक (सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त) के सिवाय स्थावर दशक की सात प्रकृतियाँ (स्थावर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय और अयशःकीर्ति) जिन नाम के सिवाय सात प्रत्येक प्रकृतियाँ (अगुरूलघु, उपघात, पराघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, निर्माण) त्रस दशक में से चार प्रकृतियाँ (त्रस नाम, बादर नाम, पर्याप्त नाम, प्रत्येक नाम) नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति-ये बीस प्रकृतियाँ तिर्यंच गति की तरह जघन्य सागरोपम के सातिया दो भाग में पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की उत्कृष्ट 20 कोटाकोटि सागरोपम से कहना।

त्रस दशक की छह प्रकृतियाँ (स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशःकीर्ति), उच्च गोत्र और शुभ विहायोगति-इन आठ प्रकृतियों में से यशःकीर्ति और उच्च गोत्र - ये दो प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य आठ मुहूर्त्त की और शेष छह प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के सातिया एक भाग की यानी (1/7) सागरोपम की बांधता है, उत्कृष्ट आठों प्रकृतियाँ दश कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल एक हजार वर्ष का है। ये आठों प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया एक भाग की यानी (1/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय 25 सागरोपम के सातिया एक भाग की यानी (25/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय 50 सागरोपम के सातिया एक भाग की यानी (50/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय 100 सागरोपम के सातिया एक भाग की यानी (100/7) सागरोपम की, असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया एक भाग की यानी (1000/7) सागरोपम की बांधते हैं, जघन्य उक्त उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय यशःकीर्ति और उच्च गोत्र जघन्य आठ मुहूर्त्त की और शेष छह प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है तथा आठों प्रकृतियाँ उत्कृष्ट दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल एक हजार वर्ष का है। इस प्रकार कुल मिलाकर- 20 + 3+ 1 + 16 + 3 + 5 + 1 + 1 + 2 + 4 + 6 + 2 + 2 + 16 + 6 + 5 + 5 + 10 + 12 + 20 + 8 = 148 आलापक हुए।

अबाधाकाल का थोकड़ा- चार्ट रूप में

क्र.सं.	प्रकृतियों के नाम	बांधने वाले जीव	जघन्य स्थिति	उत्कृष्ट स्थिति	उत्कृष्ट अबाधाकाल
1-14	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त.	समुच्चय जीव	अन्तर्मुहूर्त्त	30 कोटाकोटि सागरोपम	3000 वर्ष
15-20	5 निद्रा और असाता वेदनीय	समुच्चय जीव	1 सागर का 3/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	30 कोटाकोटि सागरोपम	3000 वर्ष
1-20	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त., 5 निद्रा और असाता वेदनीय	एकेन्द्रिय	1 सागर का 3/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	एक साग. के 3/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
1-20	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त., 5 निद्रा और असाता वेदनीय	द्वीन्द्रिय	25 सागर का 3/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 साग. के 3/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
1-20	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त., 5 निद्रा और असाता वेदनीय	त्रीन्द्रिय	50 सागर का 3/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 साग. के 3/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
1-20	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त., 5 निद्रा और असाता वेदनीय	चतुरिन्द्रिय	100 सागर का 3/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 साग. के 3/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
1-20	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त., 5 निद्रा और असाता वेदनीय	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर का 3/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 साग. के 3/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
1-14	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त.,	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तर्मुहूर्त्त	30 कोटाकोटि सागरोपम	3000 वर्ष
15-20	5 निद्रा और असाता वेदनीय	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	30 कोटाकोटि सागरोपम	3000 वर्ष
21	सातावेदनीय (साम्परायिक)	समुच्चय जीव	12 मुहूर्त्त	15 कोटाकोटि सागरोपम	1500 वर्ष
21	सातावेदनीय	एकेन्द्रिय	एक सागर का 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	एक सागर का 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
21	सातावेदनीय	द्वीन्द्रिय	25 सागर का 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 सागर का 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
21	सातावेदनीय	त्रीन्द्रिय	50 सागर का 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 सागर का 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
21	सातावेदनीय	चतुरिन्द्रिय	100 सागर का 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 सागर का 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
21	सातावेदनीय	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर का 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 सागर का 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

21	सातावेदनीय	संज्ञी पंचेन्द्रिय	12 मुहूर्त्त	15 कोटाकोटि सागरोपम	1500 वर्ष
22-33	अन., अप्र., प्रत्या. क्रोध, मान, माया, लोभ	समुच्चय जीव	1 सागर का 4/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	40 कोटाकोटि सागरोपम	4000 वर्ष
34	संज्वलन क्रोध	समुच्चय जीव	2 महीने	40 कोटाकोटि सागरोपम	4000 वर्ष
35	संज्वलन मान	समुच्चय जीव	1 महीने	40 कोटाकोटि सागरोपम	4000 वर्ष
36	संज्वलन माया	समुच्चय जीव	पन्द्रह दिन	40 कोटाकोटि सागरोपम	4000 वर्ष
37	संज्वलन लोभ	समुच्चय जीव	अन्तर्मुहूर्त्त	40 कोटाकोटि सागरोपम	4000 वर्ष
22-37	अन., अप्र., प्रत्या., संज्व. क्रोध, मान, माया, लोभ	एकेन्द्रिय	एक सागर के 4/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	एक सागर के 4/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
22-37	अन., अप्र., प्रत्या., संज्व. क्रोध, मान, माया, लोभ	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 4/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 सागर के 4/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
22-37	अन., अप्र., प्रत्या., संज्व. क्रोध, मान, माया, लोभ	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 4/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 सागर के 4/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
22-37	अन., अप्र., प्रत्या., संज्व. क्रोध, मान, माया, लोभ	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 4/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 सागर के 4/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
22-37	अन., अप्र., प्रत्या., संज्व. क्रोध, मान, माया, लोभ	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 4/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 सागर के 4/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
22-33	अन., अप्र., प्रत्या. क्रोध, मान, माया, लोभ	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	40 कोटाकोटि साग.	4000 वर्ष
34	संज्वलन क्रोध	संज्ञी पंचेन्द्रिय	2 महीने	40 कोटाकोटि साग.	4000 वर्ष
35	संज्वलन मान	संज्ञी पंचेन्द्रिय	1 महीने	40 कोटाकोटि साग.	4000 वर्ष
36	संज्वलन माया	संज्ञी पंचेन्द्रिय	15 दिन	40 कोटाकोटि साग.	4000 वर्ष
37	संज्वलन लोभ	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तर्मुहूर्त्त	40 कोटाकोटि साग.	4000 वर्ष
38-39	हास्य, रति	समुच्चय जीव	एक सागर के 1/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष

40	पुरुषवेद	समुच्चय जीव	आठ वर्ष	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
38-40	हास्य, रति, पुरुषवेद	एकेन्द्रिय	1 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
38-40	हास्य, रति, पुरुषवेद	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
38-40	हास्य, रति, पुरुषवेद	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
38-40	हास्य, रति, पुरुषवेद	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
38-40	हास्य, रति, पुरुषवेद	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
38-39	हास्य, रति	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तःकोटाकोटि सागरोपम	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
40	पुरुषवेद	संज्ञी पंचेन्द्रिय	8 वर्ष	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	समुच्चय जीव	एक सागर के 2/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	20 कोटाकोटि सागरोपम	2000 वर्ष
41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	एकेन्द्रिय	1 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	25 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	50 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	100 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक	संज्ञी	अन्तः कोटाकोटि	20 कोटाकोटि	2000 वर्ष

	वेद	पंचेन्द्रिय	सागरोपम	सागरोपम	
46	स्त्रीवेद	समुच्चय जीव	एक सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	15 कोटाकोटि सागरोपम	1500 वर्ष
46	स्त्रीवेद	एकेन्द्रिय	1 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
46	स्त्रीवेद	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
46	स्त्रीवेद	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
46	स्त्रीवेद	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
46	स्त्रीवेद	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
46	स्त्रीवेद	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	15 कोटाकोटि सागरोपम	1500 वर्ष
47	मिथ्यात्व मोहनीय	समुच्चय जीव	एक सागरोपम में पल्यो. का असं. भाग कम	70 कोटाकोटि सागरोपम	7000 वर्ष
47	मिथ्यात्व मोहनीय	एकेन्द्रिय	1 सागरोपम में पल्यो. के असं. भाग कम	1 सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त
47	मिथ्यात्व मोहनीय	द्वीन्द्रिय	25 सागरोपम में पल्यो. के असं. भाग कम	25 सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त
47	मिथ्यात्व मोहनीय	त्रीन्द्रिय	50 सागरोपम में पल्यो. के असं. भाग कम	50 सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त
47	मिथ्यात्व मोहनीय	चतुरिन्द्रिय	100 सागरोपम में पल्यो. के असं. भाग कम	100 सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त
47	मिथ्यात्व मोहनीय	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागरोपम में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त
47	मिथ्यात्व मोहनीय	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	70 कोटाकोटि सागरोपम	7000 वर्ष
48	मिश्र मोहनीय	समुच्चय जीव	अंतर्मुहूर्त्त	अंतर्मुहूर्त्त	

48	मिश्र मोहनीय	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अंतर्मुहूर्त्त	अंतर्मुहूर्त्त	
49	सम्यक्त्व मोहनीय	समुच्चय जीव	अंतर्मुहूर्त्त	66 सागरोपम से कुछ अधिक	
49	सम्यक्त्व मोहनीय	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अंतर्मुहूर्त्त	66 सागरोपम से कुछ अधिक	
50-51	नरकायु और देवायु	समुच्चय जीव	10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक	33 सागरोपम और करोड़ पूर्व का 3रा भाग अधिक	करोड़ पूर्व का तीसरा भाग
50-51	नरकायु और देवायु	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक	पल्यो. का असं. भाग तथा करोड़ पूर्व का 3रा भाग अधिक	करोड़ पूर्व का तीसरा भाग
50-51	नरकायु और देवायु	संज्ञी पंचेन्द्रिय	10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक	33 सागरोपम और करोड़ पूर्व का 3रा भाग अधिक	करोड़ पूर्व का तीसरा भाग
50-51	नरकायु और देवायु	मनुष्य	अन्तर्मुहूर्त्त अधिक 10000 वर्ष	33 साग. करोड़ पूर्व के तीसरे भाग अधिक	करोड़ पूर्व का तीसरा भाग
52-53	तिर्यंचायु और मनुष्यायु	समुच्चय जीव	अन्तर्मुहूर्त्त	तीन पल्योपम तथा करोड़ पूर्व का 3रा भाग अधिक	करोड़ पूर्व का तीसरा भाग
52-53	तिर्यंचायु और मनुष्यायु	एके., द्वी., त्री., चतु.	अन्तर्मुहूर्त्त	करोड़ पूर्व और अपनी आयु का तीसरा भाग अधिक	उन-उन की आयु तीसरा भाग
52-53	तिर्यंचायु और मनुष्यायु	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तर्मुहूर्त्त	पल्यो. का असं. भाग और करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक	
52-53	तिर्यंचायु और मनुष्यायु	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तर्मुहूर्त्त	तीन पल्योपम तथा करोड़ पूर्व का 3रा भाग अधिक	
52-53	तिर्यंचायु और मनुष्यायु	मनुष्य	अन्तर्मुहूर्त्त	तीन पल्योपम	

				करोड़ पूर्व का 3रा भाग अधिक	
54-59	नरक गति, नरकानुपूर्वी और वैक्रिय चतुष्क	समुच्चय जीव	1000 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	20 कोटाकोटि सागरोपम	2000 वर्ष
54-59	नरक गति, नरकानुपूर्वी और वैक्रिय चतुष्क	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
54-59	नरक गति, नरकानुपूर्वी और वैक्रिय चतुष्क	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	20 कोटाकोटि सागरोपम	2000 वर्ष
60-61	देवगति, देवानुपूर्वी	समुच्चय जीव	1000 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
60-61	देवगति, देवानुपूर्वी	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागर का 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
60-61	देवगति, देवानुपूर्वी	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तःकोटाकोटि सागरोपम	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	समुच्चय जीव	1 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	15 कोटाकोटि सागरोपम	1500 वर्ष
62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	एकेन्द्रिय	1 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	25 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	50 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	100 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	15 कोटाकोटि सागरोपम	1500 वर्ष
64-102	तिर्यचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस	समुच्चय जीव	1 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. का असं.	20 कोटाकोटि सागरोपम	2000 वर्ष

	त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति		भाग कम		
64-102	तिर्यचगति, तिर्यचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति	एकेन्द्रिय	1 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
64-102	तिर्यचगति, तिर्यचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	25 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
64-102	तिर्यचगति, तिर्यचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	50 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
64-102	तिर्यचगति, तिर्यचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	100 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

	नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति				
64-102	तिर्यचगति, तिर्यचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
64-102	तिर्यचगति, तिर्यचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	20 कोटाकोटि सागरोपम	2000 वर्ष
103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	समुच्चय जीव	1 सागर के 9/35 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	18 कोटाकोटि सागरोपम	1800 वर्ष
103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	एकेन्द्रिय	1 सागर के 9/35 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1 सागर के 9/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 9/35 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 सागर के 9/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 9/35 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 सागर के 9/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 9/35 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 सागर के 9/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 9/35 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 सागर के 9/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	18 कोटाकोटि सागरोपम	1800 वर्ष
109-110	यशःकीर्ति व उच्च गोत्र	समुच्चय जीव	8 मुहूर्त्त की	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष

111-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर पंचक, शुभ विहायोगति	समुच्चय जीव	1 सागर के 1/7 भाग में पल्योपम के असं. भाग कम	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
109-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर षट्क, शुभ विहायोगति, उच्च गोत्र	एकेन्द्रिय	1 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
109-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर षट्क, शुभ विहायोगति , उच्च गोत्र	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
109-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर षट्क, शुभ विहायोगति, उच्च गोत्र	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
109-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर षट्क, शुभ विहायोगति, उच्च गोत्र	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
109-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर षट्क, शुभ विहायोगति, उच्च गोत्र	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
109-110	यशःकीर्ति व उच्च गोत्र	संज्ञी पंचेन्द्रिय	8 मुहूर्त्त की	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
111-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर पंचक, शुभ विहायोगति	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
122-126	आहारक चतुष्क और जिन नाम	समुच्चय जीव	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त
122-126	आहारक चतुष्क और जिन नाम	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त
127-136	पांच वर्ण, पांच रस	समुच्चय जीव	एक सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	20, 17.5 , 15, 12.5, 10 कोटाकोटि सागरोपम	2000, 1750, 1500, 1250, 1000 वर्ष
127-136	पांच वर्ण, पांच रस	एकेन्द्रिय	एक सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
127-136	पांच वर्ण, पांच रस	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	25 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
127-136	पांच वर्ण, पांच रस	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 8/28,	50 सागर के	अन्तर्मुहूर्त्त

			7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग	
127-136	पांच वर्ण, पांच रस	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	100 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
127-136	पांच वर्ण, पांच रस	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
127-136	पांच वर्ण, पांच रस	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	20, 17.5 , 15, 12.5, 10 कोटाकोटि सागरोपम	2000, 1750, 1500, 1250, 1000 वर्ष
137-148	6 संहनन, 6 संस्थान	समुच्चय जीव	एक सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	10, 12 , 14, 16, 18 और 20 कोटाकोटि सागरोपम	1000, 1200, 1400, 1600, 1800, 2000 वर्ष
137-148	6 संहनन, 6 संस्थान	एकेन्द्रिय	एक सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	एक सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
137-148	6 संहनन, 6 संस्थान	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	25 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
137-148	6 संहनन, 6 संस्थान	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	50 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
137-148	6 संहनन, 6 संस्थान	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	100 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
137-148	6 संहनन, 6 संस्थान	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35,	1000 सागर के 5/35, 6/35,	अन्तर्मुहूर्त्त

			9/35, 10/35 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग	
137-148	6 संहनन, 6 संस्थान	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	10, 12, 14, 16, 18 और 20 कोटाकोटि सागरोपम	1000, 1200, 1400, 1600, 1800 और 2000 वर्ष

अठाणु बोल का बासठिया

(महादण्डक)

प्रज्ञापना सूत्र पद 3 में 98 बोल की अल्पबहुत्व का वर्णन है। वह बासठिया युक्त इस प्रकार है-

	बोल	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
1.	सबसे थोड़े गर्भज मनुष्य	2	14	15	12	6
2.	इनसे मनुष्यिनी संख्यात गुणी	2	14	13	12	6
3.	बादर तेउकाय पर्याप्त असंख्यात गुणा	1	1	1	3	3
4.	पाँच अनुत्तर विमान के देव असंख्यात गुणा	2	1	11	6	1
5.	ग्रैवेयक की ऊपर की त्रिक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
6.	मध्यम त्रिक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
7.	नीचे की त्रिक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
8.	बारहवें देवलोक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
9.	ग्यारहवें देवलोक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
10.	दसवें देवलोक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
11.	नौवें देवलोक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
12.	सातवीं नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
13.	छठी नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
14.	आठवें देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
15.	सातवें देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
16.	पाँचवीं नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	2	4	11	9	2
17.	छठे देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
18.	चौथी नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
19.	पाँचवें देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1

20.	तीसरी नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	2	4	11	9	2
21.	चौथे देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
22.	तीसरे देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
23.	दूसरी नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
24.	सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा	1	1	3	4	3
25.	दूसरे देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
26.	दूसरे देवलोक की देवी संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
27.	पहले देवलोक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
28.	पहले देवलोक की देवी संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
29.	भवनपति देव असंख्यात गुणा	3	4	11	9	4
30.	भवनपति देवी संख्यात गुणा	2	4	11	9	4
31.	पहली नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	3	4	11	9	1
32.	खेचर तिर्यंच पुरुष असंख्यात गुणा	2	5	13	9	6
33.	खेचर स्त्री संख्यात गुणी	2	5	13	9	6
34.	थलचर पुरुष संख्यात गुणा	2	5	13	9	6
35.	थलचर स्त्री संख्यात गुणी	2	5	13	9	6
36.	जलचर पुरुष संख्यात गुणा	2	5	13	9	6
37.	जलचर स्त्री संख्यात गुणी	2	5	13	9	6
38.	व्यन्तर देव संख्यात गुणा	3	4	11	9	4
39.	व्यन्तर देवी संख्यात गुणी	2	4	11	9	4
40.	ज्योतिषी देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
41.	ज्योतिषी देवी संख्यात गुणी	2	4	11	9	1
42.	खेचर नपुंसक (गर्भज) सं. गुणा	2	5	13	9	6
43.	थलचर नपुंसक (गर्भज) सं. गुणा	2	5	13	9	6
44.	जलचर नपुंसक (गर्भज) सं. गुणा	2	5	13	9	6
45.	चौरेंद्रिय के पर्याप्त संख्यात गुणा	1	1	2	4	3
46.	पंचेन्द्रिय के पर्याप्त	2	12	14	10	6

	विशेषाधिक					
47.	बेइन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक	1	1	2	3	3
48.	तेइंद्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक	1	1	2	3	3
49.	पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त असं. गुणा	2	3	5	9	6
50.	चौरेंद्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक	1	2	3	6	3
51.	तेइंद्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक	1	2	3	5	3
52.	बेइंद्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक	1	2	3	5	3
53.	प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय के पर्याप्त असंख्यात गुणा	1	1	1	3	3
54.	बादर निगोद के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
55.	बादर पृथ्वीकाय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
56.	बादर अप्काय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
57.	बादर वायुकाय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	4	3	3
58.	बादर तेउकाय के अपर्याप्त असं. गुणा	1	1	3	3	3
59.	प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा	1	1	3	3	4
60.	बादर निगोद के अपर्याप्त असं. गुणा	1	1	3	3	3
61.	बादर पृथ्वीकाय के अपर्या. असं. गुणा	1	1	3	3	4
62.	बादर अप्. के अपर्या. असं. गुणा	1	1	3	3	4
63.	बादर वायुकाय के अपर्या. असं. गुणा	1	1	3	3	3
64.	सूक्ष्म तेउकाय के अपर्या. असं. गुणा	1	1	3	3	3
65.	सूक्ष्म पृथ्वीकाय के अपर्या. विशेषाधिक	1	1	3	3	3
66.	सूक्ष्म अप्काय के अपर्या. विशेषाधिक	1	1	3	3	3

67.	सूक्ष्म वायुकाय के अपर्या. विशेषाधिक	1	1	3	3	3
68.	सूक्ष्म तेउकाय के पर्याप्त सं. गुणा	1	1	1	3	3
69.	सूक्ष्म पृथ्वीकाय के पर्याप्त विशेषा.	1	1	1	3	3
70.	सूक्ष्म अप्काय के पर्याप्त विशेषा.	1	1	1	3	3
71.	सूक्ष्म वायुकाय के पर्याप्त विशेषा.	1	1	1	3	3
72.	सूक्ष्म निगोद के अपर्या. असं. गुणा	1	1	3	3	3
73.	सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त सं. गुणा	1	1	1	3	3
74.	अभव्य जीव अनंत गुणा	14	1	13	6	6
75.	प्रतिपतित समदृष्टि अनंत गुणा	14	2	13	6	6
76.	सिद्ध भगवंत अनंत गुणा	0	0	0	2	0
77.	बादर वनस्पतिकाय के पर्याप्त अनंत गुणा	1	1	1	3	3
78.	बादर के पर्याप्त विशेषाधिक	6	14	15	12	6
79.	बादर वनस्पतिकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा	1	1	3	3	4
80.	बादर के अपर्याप्त विशेषाधिक	6	3	5	9	6
81.	समुच्चय बादर विशेषाधिक	12	14	15	12	6
82.	सूक्ष्म वनस्पतिकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा	1	1	3	3	3
83.	सूक्ष्म के अपर्याप्त विशेषाधिक	1	1	3	3	3
84.	सूक्ष्म वनस्पतिकाय पर्याप्त संख्यात गुणा	1	1	1	3	3
85.	सूक्ष्म के पर्याप्त विशेषाधिक	1	1	1	3	3
86.	समुच्चय सूक्ष्म विशेषाधिक	2	1	3	3	3
87.	भवसिद्धिया विशेषाधिक	14	14	15	12	6
88.	निगोदिया जीव विशेषाधिक	4	1	3	3	3
89.	वनस्पतिकाय के जीव विशेषाधिक	4	1	3	3	4
90.	एकेन्द्रिय जीव विशेषाधिक	4	1	5	3	4
91.	तिर्यंच जीव विशेषाधिक	14	5	13	9	6
92.	मिथ्यादृष्टि जीव विशेषाधिक	14	1	13	6	6
93.	अव्रती जीव विशेषाधिक	14	4	13	9	6
94.	सकषायी जीव विशेषाधिक	14	10	15	10	6

95.	छद्मस्थ जीव विशेषाधिक	14	12	15	10	6
96.	सयोगी जीव विशेषाधिक	14	13	15	12	6
97.	संसारी जीव विशेषाधिक	14	14	15	12	6
98.	समुच्चय जीव विशेषाधिक	14	14	15	12	6

98 बोल की अल्पबहुत्व सम्बन्धी उल्लेखनीय तथ्य

1. 98 बोलों की अल्पबहुत्व क्रमशः समझनी चाहिए। इनमें यह बतलाया गया है कि एक के बाद दूसरा बोल कितना गुणा अधिक है।
2. जिन बोलों की अल्पबहुत्व इस थोकड़े में बतलायी है, वह तभी सम्भव होगी, जबकि जिससे तुलना कर अल्पबहुत्व कही गई है, वे दोनों बोल अपनी उत्कृष्ट अवस्था में विद्यमान हों। जैसे-23वाँ बोल है-दूसरी नरक के नेरइये असंख्यात गुण तथा 24वाँ बोल है-सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्यात गुण। इन दोनों बोलों में उक्त अल्पबहुत्व तभी सम्भव है जबकि 23वाँ तथा 24वाँ दोनों अपनी-अपनी उत्कृष्ट अवस्था में विद्यमान हों।
3. 98 बोलों में कुछ बोल अशाश्वत भी हैं, जैसे-24वाँ-विरह की अपेक्षा, 95वाँ-श्रेणि में विरह की अपेक्षा, 97वाँ-14वें गुणस्थान में विरह की अपेक्षा।

   24वाँ बोल सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा है। जब 24 मुहूर्त्त का उत्कृष्ट विरह पड़ता है तब यह बोल मिलता ही नहीं है।

   95 वाँ बोल छद्मस्थ जीव विशेषाधिक है। यह अल्पबहुत्व 94 वें बोल की अपेक्षा तुलना करने पर घटित होती है। इन दोनों बोलों की अल्पबहुत्व भी तभी सम्भव है, जब श्रेणी करने वाले जीव ग्यारहवें अथवा बारहवें गुणस्थान में हों। उपशम श्रेणि व क्षपक श्रेणि दोनों ही शाश्वत नहीं हैं। इनमें भी उपशम श्रेणि का पृथक्त्व वर्ष का तथा क्षपक श्रेणि का 6 माह का उत्कृष्ट विरह पड़ सकता है। अतः विरह काल में 94वाँ से 95वाँ बोल विशेषाधिक न होकर समान ही होंगे।

   97वाँ बोल-संसारी जीव विशेषाधिक है। यह अल्पबहुत्व 96वें बोल की अपेक्षा तुलना करने पर बनती है। यह तभी सम्भव है जबकि चौदहवें-अयोगी केवली गुणस्थान में जीव रहे। 14वाँ गुणस्थान शाश्वत नहीं है। सिद्धों के विरह के समान इसमें भी उत्कृष्ट 6 माह का विरह पड़ता है तब 14वाँ गुणस्थान भी नहीं मिलेगा। उस समय 14वें गुणस्थान में अयोगी जीव नहीं होने से 96-97वें बोल की अल्पबहुत्व विशेषाधिक न होकर दोनों की एक समान ही होगी।
4. बोल क्रमांक 54,60,72 और 73 ये चारों निगोदिया जीवों के औदारिक शरीर की अपेक्षा से समझने चाहिए। क्योंकि उनके औदारिक शरीर असंख्यात ही होते हैं। ये चारों बोल निगोद कहलाते हैं।
5. बोल क्रमांक 82,84,88 सूक्ष्म व साधारण वनस्पतिकाय के जीवों अर्थात् निगोदिया जीवों की अपेक्षा से समझने चाहिए, क्योंकि इन तीनों बोलों में निगोदिया जीव अनन्त-अनन्त होते हैं।
6. असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्त जीव मरकर पहली नारकी, भवनपति तथा वाणव्यन्तर देवों में जाकर उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसे जीव अपर्याप्त अवस्था में कुछ समय असन्नी रहते हैं, इस अपेक्षा से पहली नारकी, भवनपति, वाणव्यन्तर देवों में जीव के 3 भेद (असन्नी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्त, सन्नी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्त तथा सन्नी पंचेन्द्रिय का पर्याप्त) होते हैं।
7. यद्यपि असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव मरकर भवनपति, वाणव्यन्तर में देवी भी बन सकता है, किन्तु नपुंसक अवस्था तक उसकी गणना देवी में नहीं करके देवों में ही की जाती है, वह भी मात्र अन्तर्मुहूर्त्त के लिए होती

है। जिस प्रकार से इसी थोकड़े के पहले बोल सबसे थोड़े गर्भज मनुष्य में नपुंसकवेदी मनुष्य को भी सम्मिलित किया गया है, किन्तु मनुष्यिनी के बोल में नपुंसक वेदी मनुष्य की गणना नहीं की। उसी प्रकार देवी में भी नपुंसकवेदी असन्नी पंचेन्द्रिय की गणना नहीं की। अतः देवी में जीव के भेद-2 (सन्नी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्त व पर्याप्त) ही माने गये हैं।

1. विरह द्वार

(पन्नवणा सूत्र के छठे पद के आधार से)

नाम	विरह	
	जघन्य	उत्कृष्ट
चारों गति का विरह	1 समय	12 मुहूर्त्त
भवनपति से दूसरे देवलोक तक, पहली नरक, सम्मूर्च्छिम मनुष्य	1 समय	24 मुहूर्त्त
दूसरी नरक	1 समय	7 अहोरात्रि (रात-दिन)
तीसरी नरक	1 समय	15 अहोरात्रि
चौथी नरक	1 समय	1 माह
पाँचवी नरक	1 समय	2 माह
छठी नरक	1 समय	4 माह
सातवीं नरक	1 समय	6 माह
तीसरा देवलोक	1 समय	9 अहोरात्रि 20 मुहूर्त्त
चौथा देवलोक	1 समय	12 अहोरात्रि 10 मुहूर्त्त
पाँचवा देवलोक	1 समय	22.5 अहोरात्रि
छठा देवलोक	1 समय	45 अहोरात्रि
सातवाँ देवलोक	1 समय	80 अहोरात्रि
आठवाँ देवलोक	1 समय	100 अहोरात्रि
9-10 देवलोक	1 समय	संख्यात महीनों का
11-12 देवलोक	1 समय	संख्यात वर्षों का
9 ग्रैवेयक पहली त्रिक (1-3)	1 समय	संख्यात सैंकड़ों वर्षों का
दूसरी त्रिक (4-6)	1 समय	संख्यात हजार वर्षों का
तीसरी त्रिक (7-9)	1 समय	संख्यात लाखों वर्षों का
4 अनुत्तर विमान	1 समय	पल्योपम का असंख्यातवां भाग
सर्वार्थसिद्ध विमान	1 समय	पल्योपम का संख्यातवां भाग
पाँच स्थावर	अविरह	अविरह
तीन विकलेन्द्रिय, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय	1 समय	अन्तर्मुहूर्त्त
सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, सन्नी मनुष्य	1 समय	बारह मुहूर्त्त
64 इन्द्र, सिद्ध भगवान	1 समय	छः माह
चन्द्र ग्रहण	6 माह	42 माह
सूर्य ग्रहण	6 माह	48 वर्ष
नवीन सम्यग् दृष्टि	1 समय	7 अहोरात्रि

नवीन श्रावक	1 समय	12 अहोरात्रि
नवीन साधु	1 समय	15 अहोरात्रि
भरत ऐरावत की अपेक्षा- चक्रवर्ती	देशोन 2,52,000 वर्ष	देशोन 18 कोड़ा कोड़ी सागरोपम
तीर्थंकर, 3 चारित्र (परि.वि., सू.सं.,यथा.)	84,000 वर्ष	देशोन 18 कोड़ा कोड़ी सागरोपम
बलदेव वासुदेव	2,52,000 वर्ष	देशोन 20 कोड़ा कोड़ी सागरोपम
चार तीर्थ, 5 महाव्रत, 2 चारित्र (सामा., छेदो.)	63,000 वर्ष	देशोन 18 कोड़ा कोड़ी सागरोपम

उद्वर्तन अर्थात् निकलना। यह विरह द्वार के समान ही जानना चाहिए। अन्तर इतना है कि सिद्धों का उद्वर्तन नहीं होता। क्योंकि सिद्ध भगवान पुनः जन्म धारण नहीं करते। वैमानिक देवों में उद्वर्तन के स्थान पर च्यवन कहना।

विरह द्वार के थोकड़े से सम्बन्धी ज्ञातव्य तथ्य

1. जितने समय तक उस-उस गति-जाति आदि में एक भी जीव उत्पन्न नहीं हो, उस काल को 'विरह' कहते हैं। अथवा जितने समय तक अभाव रूप अवस्था होती है, उसे विरह कहते हैं।
2. चारों गतियों का उत्कृष्ट विरह बारह मुहूर्त्त बतलाया है, जिसका तात्पर्य है कि बारह मुहूर्त्त के बाद तो कोई न कोई जीव एक गति से दूसरी गति में उत्पन्न होता ही है।
3. संग्रहणी वृत्ति के आधार से तथा क्षेत्रलोक प्रकाश (उत्तरार्ध) सर्ग 27 श्लोक सं. 439 से 442 तथा 478 के आधार से नवमें देवलोक से लेकर नव ग्रैवेयक तक का विरह इस प्रकार समझना चाहिए-

नवमें देवलोक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात मास अर्थात् एक वर्ष के अन्दर
दसवें देवलोक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात मास अर्थात् एक वर्ष से कुछ अधिक
ग्यारहवें देवलोक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात वर्ष अर्थात् 100 वर्ष के अन्दर
बारहवें देवलोक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात वर्ष अर्थात् 100 वर्ष से कुछ अधिक
नव ग्रैवेयक की प्रथम त्रिक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात सौ वर्ष अर्थात् 1000 वर्ष के अन्दर
नव ग्रैवेयक की मध्यम त्रिक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात हजार वर्ष अर्थात् 1 लाख वर्ष के अन्दर
नव ग्रैवेयक की अन्तिम त्रिक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात लाख वर्ष अर्थात् 1 करोड़ वर्ष के अन्दर

चार अनुत्तर विमान के देवों का विरह- भगवती शतक 5 उद्देशक 8 में विरह से दुगुना अवस्थान काल बताया गया है। जैसे पहली नारकी का 24 मुहूर्त्त का विरह तथा अवस्थान काल 48 मुहूर्त्त का बताया है। इसी प्रकार तीसरे देवलोक का अवस्थान काल 18 रात-दिन तथा 40 मुहूर्त्त का बताया, आगे भी दुगुना अवस्थान काल बताया है।

अवस्थान काल से तात्पर्य जीवों की यथा स्थिति से है। अर्थात् विरह काल में जीव आते जाते नहीं तथा विरह काल के बाद भी उतने ही काल तक ऐसा हो सकता है कि जितने जीव जन्म लेते हैं, उतने ही वापस निकल जाते हैं। अर्थात जीवों की संख्या उतनी ही बनी रहती है, उसमें हानि वृद्धि नहीं होती, उस काल

को अवस्थान काल कहते हैं। जैसे पहली नारकी में 24 मुहूर्त्त तक एक भी जीव उत्पन्न नहीं हुआ तथा निकला भी नहीं। अगले 24 मुहूर्त्त में 100 जीव उत्पन्न हुए और दूसरे 100 जीव निकल गये। इस प्रकार विरह काल से दुगने समय तक अर्थात् 48 मुहूर्त्त तक जीवों की संख्या पहली नारकी में एक समान रह जाने के कारण उसे अवस्थान काल कहा गया है। इसी प्रकार अन्यत्र भी समझ लेना चाहिए।

चार अनुत्तर विमान का अवस्थान काल असंख्यात हजारों वर्षों का है। इससे उनका विरह काल हजार असंख्यात काल सिद्ध हो जाता है। यह असंख्यात का भेद दूसरा असंख्यात अर्थात् मध्यम परीत्त असंख्यात समझना चाहिए। वह ग्रैवेयक के ऊपरी त्रिक से संख्यात गुणा ही होगा।

सर्वार्थसिद्ध विमान का उत्कृष्ट अन्तर पल्योपम का संख्यातवां भाग है। वह चार अनुत्तर विमान के अन्तर से असंख्यात गुणा बड़ा है, क्योंकि सर्वार्थसिद्ध में चार अनुत्तर विमान से असंख्यात गुणे कम देवता होते हैं।

4. तीन विकलेन्द्रिय और पाँच असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्कृष्ट विरह अन्तर्मुहूर्त्त का होता है। साथ ही इन जीवों के अपर्याप्त व पर्याप्त दोनों ही भेद शाश्वत भी होते हैं। इसका कारण यह है कि यद्यपि अपर्याप्त अवस्था का काल भी अन्तर्मुहूर्त्त है तथा विरह का काल भी अन्तर्मुहूर्त्त है तथापि अपर्याप्त अवस्था का अन्तर्मुहूर्त्त बड़ा होता है तथा विरह का अन्तर्मुहूर्त्त छोटा होता है। इसलिए विरह काल में भी तीन विकलेन्द्रिय और असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में भी शाश्वत होते हैं। पर्याप्त अवस्था में लम्बी स्थिति होने से वे शाश्वत होते ही हैं।
5. सन्नी (गर्भज) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्कृष्ट विरह बारह मुहूर्त्त का होता है। उनकी अपर्याप्त अवस्था की स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त ही होती है। अपर्याप्त अवस्था की स्थिति से विरहकाल की स्थिति अधिक होने के कारण सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत नहीं हो सकते।
6. सिद्ध गति का उत्कृष्ट विरह छह मास का बतलाया है। अर्थात् छह मास के बाद अवश्य ही कोई न कोई कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य सिद्ध होता ही है। 64 इन्द्रों में छह मास से अधिक पद खाली नहीं रहता, इसलिए इनका विरह भी उत्कृष्ट छह माह का माना गया है। 64 इन्द्रों के विरह का उल्लेख भगवती सूत्र श.8 उद्दे. 8 में तथा जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति द्वीपसमुद्र उद्देशक में मिलता है।
7. ग्रहण सम्बन्धी विरह निम्नानुसार समझना चाहिए –

		विरह	
क्र.सं.	ग्रहण	जघन्य	उत्कृष्ट
1.	कोई भी ग्रहण की अपेक्षा	15 दिन	42 माह
2.	चन्द्रग्रहण की अपेक्षा	06 माह	42 माह
3.	सूर्य ग्रहण की अपेक्षा	06 माह	48 वर्ष

सूर्यग्रहण भी 4 वर्ष (48 माह) में अवश्य हो जाता हैं अर्थात् उसका विरह 4 वर्ष से अधिक नहीं हो सकता। किन्तु यह ग्रहण अलग-अलग राशि पर होता है। एक ही राशि पर ग्रहण का उत्कृष्ट विरह 48 वर्ष का होता है।

चन्द्र और सूर्य ग्रहण के विरह का उल्लेख भगवती सूत्र शतक 12 उद्देशक 6 में किया गया है।

8. नवीन साधु का विरह – 1,3,4,5 गुणस्थान से 7वें गुणस्थान में आने की अपेक्षा समझना चाहिए।
नवीन श्रावक का विरह – 1,3,4,6 गुणस्थान से पाँचवें गुणस्थान में आने की अपेक्षा समझना चाहिए।

नवीन सम्यग्दृष्टि का विरह - पहले अथवा तीसरे गुणस्थान से चौथे आदि गुणस्थान में आने की अपेक्षा से समझना चाहिए। नवीन साधु, श्रावक और सम्यग्दृष्टि के विरह का वर्णन विशेषावश्यक भाष्य में मिलता है।

9. चक्रवर्ती का विरह - तीर्थंकरों के अथवा तिरेसठ श्लाघनीय पुरुषों के आयु, अवगाहना, परस्पर के विरह (अन्तर) में कोई निश्चित अनुपात नहीं है। अवसर्पिणी काल होने से आयु, अवगाहना में कमी होना तो निश्चित है, परन्तु कमी का क्रम (अनुपात) निश्चित् नहीं है। जैसे कि-

बीसवें तीर्थंकर की आयु	-	30,000 वर्ष
इक्कीसवें तीर्थंकर की आयु	-	10,000 वर्ष
बाइसवें तीर्थंकर की आयु	-	1,000 वर्ष
तेइसवें तीर्थंकर की आयु	-	100 वर्ष
चौबीसवें तीर्थंकर की आयु	-	72 वर्ष

इनमें बीसवें व इक्कीसवें तीर्थंकर के बीच में 6 लाख वर्ष का अन्तर रहा। तथा इन दोनों की आयु में (30,000-10,000) 20,000 वर्ष का अन्तर रहा। इक्कीसवें तथा बाईसवें तीर्थंकर के बीच में 5 लाख वर्ष का अन्तर रहा तथा इन दोनों की आयु में (10,000-1,000) 9000 वर्ष का अन्तर रहा।

बाईसवें तथा तेइसवें तीर्थंकर के बीच में 83,750 वर्ष का अन्तर रहा तथा इन दोनों की आयु में (1,000-100) 900 वर्ष का अन्तर रहा। तेइसवें व चौबीसवें तीर्थंकर के बीच में 250 वर्ष का अन्तर रहा तथा इन दोनों की आयु में (100-72) 28 वर्ष का अन्तर रहा।

अतः निश्चित् अनुपात निकालना संभव नहीं है। चूकि अन्तिम चक्रवर्ती, बलदेव-वासुदेव के बाद में होगा, इसलिए देशोन 2,52,000 वर्ष का जघन्य विरह कहा जा सकता है। निश्चित रूप से गणना करना शक्य नहीं।

10. बलदेव व वासुदेव का जघन्य विरह 2,52,000 वर्षों का इस प्रकार समझना चाहिए-

वर्तमान अवसर्पिणी काल के अन्तिम बलदेव व वासुदेव भगवान अरिष्टनेमि के समय में हुए हैं। उनसे भगवान महावीर स्वामी का अन्तर 84,000 वर्षों का, पाँचवाँ आरा 21,000 वर्षों का, छठा आरा 21,000 वर्षों का, उत्सर्पिणी काल का पहला और दूसरा आरा भी 21,000-21,000 वर्षों के हैं। उनके 84,000 वर्ष बाद उत्सर्पिणी काल के प्रथम बलदेव व वासुदेव होते हैं। सब मिलाकर विरह 84,000+84,000+84,000=2,52,000 वर्षों का हुआ।

11. तीर्थंकर, चक्रवर्ती, साधु, श्रावक आदि का उत्कृष्ट विरह देशोन 18 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का बतलाया, उसे इस प्रकार समझना चाहिए-

उत्सर्पिणी काल

चौथा आरा - 2 कोडाकोड़ी सागरोपम (लगभग 84 लाख पूर्व कम)

पाँचवा आरा- 3 कोड़ाकोड़ी सागरोपम

छठा आरा- 4 कोड़ाकोड़ी सागरोपम

= 9 कोड़ाकोड़ी सागरोपम (लगभग 84 लाख पूर्व कम)

अवसर्पिणी काल

पहला आरा- 4 कोड़ाकोड़ी सागरोपम

दूसरा आरा- 3 कोड़ोकोड़ी सागरोपम

तीसरा आरा)- 2 कोड़ाकोड़ी सागरोपम

= 9 कोड़ाकोड़ी सागरोपम (84 लाख पूर्व कम)

इस प्रकार 18 कोड़ाकोड़ी सागरोपम में लगभग 85 लाख पूर्व कम होने से देशोन 18 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का उत्कृष्ट विरह होता है।

12. बलदेव व वासुदेव का उत्कृष्ट विरह देशोन 20 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का होता है, जिसे इस प्रकार समझा जा सकता है-

हर उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी के प्रथम व अन्तिम वासुदेव आदि (बलदेव, चक्रवर्ती और तीर्थंकर) अपने-अपने आरे के निश्चितकाल बीतने पर ही होते हैं, ऐसा मानने की परम्परा है। अवसर्पिणी काल के प्रथम वासुदेव भगवान श्रेयांसनाथ के समय में हुए। उससे पहले की उत्सर्पिणी के अन्तिम वासुदेव 14वें तीर्थंकर के समय हुए होंगे, ऐसा माना जाता है। भगवान श्रेयांसनाथ से भगवान ऋषभदेव तक का अन्तर देशोन एक कोड़ाकोड़ी सागरोपम का, उनसे पूर्व हुए उत्सर्पिणी के अन्तिम तीर्थंकर का अन्तर 18 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का (उत्सर्पिणी काल का चौथा आरा 2 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का + पाँचवां आरा 3 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का + छठा आरा 4 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का + अवसर्पिणी काल का पहला आरा 4 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का + दूसरा आरा 3 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का + तीसरा आरा 2 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का) उनसे उत्सर्पिणी काल के चौदहवें तीर्थंकर का समय देशोन एक कोड़ाकोड़ी का (उत्सर्पिणी के अन्तिम वासुदेव का समय) कुल मिलाकर देशोन 1+2+3+4+4+3+2+1 (देशोन) = देशोन (कुछ कम) 20 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का उत्कृष्ट विरह हुआ।

जैनागम स्तोक वारिधि-छठी कक्षा

दिसाणुवाइ का थोकड़ा

(दिशा की अपेक्षा जीवों का अल्पबहुत्व)

(पन्नवणा सूत्र तीसरा पद)

द्रव्य दिशा के अठारह भेद - 1. पूर्व, 2. पश्चिम, 3. उत्तर, 4. दक्षिण, 5. ईशानकोण, 6. नैऋर्त्य कोण, 7. आग्नेय कोण, 8. वायव्य कोण, 9-16. आठ दिशाओं के आठ अन्तर, 17. विमला (ऊँची दिशा) और 18. तमा (नीची दिशा)।

भाव दिशा के अठारह भेद - 1. पृथ्वीकाय, 2. अप्काय, 3. तेउकाय (तेजस्काय), 4. वायुकाय, 5. अग्रबीज, 6. मूलबीज, 7. पर्वबीज, 8. स्कंधबीज, 9. द्वीन्द्रिय, 10. त्रीन्द्रिय, 11. चतुरिन्द्रिय, 12. तिर्यंच पंचेन्द्रिय, 13. कर्मभूमि, 14. अकर्मभूमि, 15. अन्तरद्वीप, 16. सम्मूर्च्छिम मनुष्य, 17. नारकी और 18. देवता।

1. **प्रश्न** - समुच्चय जीव, वनस्पतिकाय, अप्काय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और तिर्यंच पंचेन्द्रिय-इन सात बोलों के जीव किस दिशा में थोड़े हैं, किस दिशा में अधिक हैं ?
   उत्तर - सबसे थोड़े पश्चिम दिशा में है। कारण यह है कि पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन का गौतम द्वीप है। इसलिये पश्चिम दिशा में अप्काय के जीव थोड़े हैं और इस कारण सातों ही बोल के जीव थोड़े हैं। पूर्व दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। पूर्व दिशा में गौतम द्वीप नहीं है, इस कारण अप्काय अधिक है और इसलिए सात ही बोलों के जीव विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में चंद्र सूर्य के द्वीप नहीं हैं, इसलिये अप्काय अधिक है और इसीलिये सात बोलों के जीव विशेषाधिक हैं। उत्तर दिशा में इनकी अपेक्षा विशेषाधिक हैं। कारण यह है कि उत्तर दिशा में संख्यात द्वीप समुद्र आगे जाने पर अरुणवर नामक द्वीप आता है। इस द्वीप में मानसरोवर नामक झील है जो संख्यात कोटाकोटि (कोड़ाकोड़ी) योजन लम्बी चौड़ी है। इस सरोवर के कारण उत्तर दिशा में अप्काय अधिक है और इसलिये सात बोलों के जीव विशेषाधिक हैं।
2. **प्रश्न** - पृथ्वीकाय के जीव किस दिशा में थोड़े हैं ? किस दिशा में अधिक हैं ?
   उत्तर - दक्षिण दिशा में पृथ्वीकाय के जीव सबसे थोड़े हैं। इस दिशा में भवनपतियों के 4,06,00,000 भवन हैं तथा नरकावास भी अधिक हैं अतः पोलार अधिक है पृथ्वीकाय थोड़ी है। उत्तरदिशा में इनकी अपेक्षा विशेषाधिक हैं। उत्तर दिशा में भवनपतियों के 3,66,00,000 भवन हैं तथा नरकावास भी कम हैं अतः पोलार कम है, पृथ्वीकाय अधिक है। पूर्व दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। पूर्व दिशा में पृथ्वी अधिक कठोर है। पश्चिम दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। कारण यह है कि पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन विस्तार वाला गौतम द्वीप है जो पृथ्वी रूप है।
3. **प्रश्न** - वायुकाय और व्यन्तर जाति के देवता किस दिशा में थोड़े हैं ? किस दिशा में अधिक हैं ?
   उत्तर - सबसे थोड़े पूर्व दिशा में हैं। पूर्वदिशा में पृथ्वी अधिक कठोर है इसलिये वायुकाय थोड़ी है और व्यन्तर देवता भी थोड़े हैं। इनकी अपेक्षा पश्चिम दिशा में विशेषाधिक हैं। पश्चिम दिशा में सलिलावती एवं वप्रा विजय है जो एक हजार योजन गहरी और तिर्छी है जिसमें वायुकाय भी अधिक है और व्यन्तर देवता भी अधिक हैं। इनकी अपेक्षा उत्तर दिशा में विशेषाधिक हैं। उत्तर दिशा में 3,66,00,000 भवनपति देवों के भवन हैं तथा नरकावास अधिक हैं इसलिये पोलार अधिक है। पोलार अधिक होने से वायुकाय अधिक है और व्यन्तर देवों के स्वस्थान होने से नगर भी अधिक हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में विशेषाधिक हैं।

दक्षिण दिशा में भवनपति देवों के 4,06,00,000 भवन हैं एवं नरकावास अधिक हैं इस कारण पोलार और अधिक है। पोलार अधिक होने से वायुकाय भी अधिक है और व्यन्तर देवों के नगर भी अधिक हैं। यहां कृष्णपक्षी जीव अधिक उत्पन्न होते हैं।

4. **प्रश्न** – मनुष्य, मनुष्य स्त्री, बादर तेउकाय और सिद्ध भगवान् किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर – सबसे थोड़े दक्षिण और उत्तर दिशा में हैं। सब क्षेत्रों में भरत और ऐरवत क्षेत्र छोटे हैं उनमें मनुष्य थोड़े हैं, मनुष्य के वास थोड़े हैं, बादर तेउकाय थोड़ी है और वहाँ से थोड़े जीव सिद्ध होते हैं। इनकी अपेक्षा पूर्व दिशा में संख्यात गुणा हैं। पूर्वदिशा में पूर्व महाविदेह क्षेत्र बड़ा हैं। उसमें मनुष्य अधिक हैं, मनुष्य के वास अधिक हैं, बादर तेउकाय अधिक है और वहां से बहुत जीव सिद्ध होते हैं इसलिये पूर्व दिशा में संख्यात गुणा कहा है। इनकी अपेक्षा पश्चिम दिशा में विशेषाधिक है। पश्चिम दिशा में पश्चिम महाविदेह क्षेत्र है जिसमें सलिलावती एवं वप्रा विजय है जो एक हजार योजन गहरी (ऊंडी) तिर्छी है। वहां मनुष्य बहुत हैं, मनुष्य के वास बहुत हैं, बादर तेउकाय अधिक है और वहां से बहुत जीव सिद्ध होते हैं।

5. **प्रश्न** – भवनपति देव और देवियां किस दिशा में थोड़े हैं और किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर – सबसे थोड़े पूर्व पश्चिम दिशा में हैं। पूर्व पश्चिम दिशा में भवनपति देवों के भवन नहीं है। केवल आते जाते हैं। इसकी अपेक्षा उत्तरदिशा में असंख्यात गुणा हैं क्योंकि उत्तरदिशा में 3,66,00,000 भवनपति देवों के भवन हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिणदिशा में असंख्यात गुणा हैं। दक्षिण दिशा में भवनपति देवों के 4,06,00,000 भवन हैं अतः असंख्यातगुणा बतलाये हैं। यहाँ कृष्णपक्षी अधिक उत्पन्न होते हैं।

6. **प्रश्न** – ज्योतिषी देव किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर – सबसे थोड़े पूर्व पश्चिम दिशा में हैं क्योंकि विमान दूर दूर हैं तथा इन दोनों दिशाओं में चन्द्र सूर्य के द्वीप बगीचे जैसे हैं अतः यहां ज्योतिषी देव थोड़े हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में ज्योतिषी देव विशेषाधिक हैं। क्योंकि यहां ज्योतिषी देवों के विमान अधिक हैं एवं कृष्णपक्षी जीव अधिक उत्पन्न होते हैं। इनकी अपेक्षा उत्तर दिशा में विशेषाधिक हैं, इस दिशा में ज्योतिषियों के विमान बहुत अधिक हैं एवं पास-पास हैं। उत्तर दिशा में संख्यात द्वीप समुद्र आगे जाने पर अरुणवर नामक द्वीप आता है। इस द्वीप में मानसरोवर नामक झील है जो संख्याता कोटाकोटि (कोड़ाकोड़ी) योजन लम्बी चौड़ी है। मानसरोवर के रत्नों की पाल है। यहां बहुत से ज्योतिषी देव स्नान, मंजन, क्रीडा, कौतुक के लिये आते हैं। इन्हें देख कर वहां के तिर्यंच जीवों को जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न होता है। वे करणी करके निदान करते हैं और यहां ज्योतिषी देवों में उत्पन्न होते हैं। इसलिये विशेषाधिक हैं।

7. **प्रश्न** – पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे देवलोक के देवता किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर – सबसे थोड़े पूर्व पश्चिम दिशा में हैं। इन देवलोकों में दो तरह के विमान होते हैं-आवलिका प्रविष्ट विमान और पुष्पावकीर्ण विमान। आवलिका प्रविष्ट विमान चारों दिशाओं में तुल्य हैं पर पुष्पावकीर्ण विमान पूर्व पश्चिम दिशा में कम हैं। इनकी अपेक्षा उत्तर दिशा असंख्यात गुणा हैं। उत्तर दिशा में बहुत से पुष्पावकीर्ण विमान हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में पुष्पावकीर्ण विमान अधिक हैं तथा यहां कृष्णपक्षी भी बहुत उत्पन्न होते हैं।

8. **प्रश्न** – पांचवे, छठें, सातवें और आठवें देवलोक के देवता किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर – सबसे थोड़े पूर्व, पश्चिम, उत्तर दिशा में हैं। इन दिशाओं में पुष्पावकीर्ण विमान कम हैं और कृष्णपाक्षिक जीव कम उत्पन्न होते हैं इसलिये थोड़े हैं। दक्षिण दिशा में इनकी अपेक्षा असंख्यात गुणा हैं। इस

दिशा में पुष्पावकीर्ण विमान अधिक हैं और यहां कृष्णपक्षी तिर्यंच योनि के जीव बहुत उत्पन्न होते हैं। आवलिका प्रविष्ट विमान चारों दिशाओं में तुल्य हैं।

9. **प्रश्न** – नववें देवलोक से सर्वार्थसिद्ध विमान के देवता किस दिशा में थोड़े हैं और किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर – चारों दिशाओं में तुल्य हैं।

10. **प्रश्न** – पहली नारकी के नेरीये किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं? इसी तरह दूसरी तीसरी यावत् सातवीं नारकी के नेरीये किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर – पहली नारकी के नेरीये सबसे थोड़े पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा में हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में असंख्यात गुणा हैं। इसी तरह दूसरी यावत् सातवीं नारकी तक के नेरियों का अल्प बहुत्व है।

11. **प्रश्न** – पहली नारकी से सातवीं नारकी तक के नेरीये किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर – सबसे थोड़े सातवीं नारकी के नेरीये पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा में हैं। इन दिशाओं में नेरीये थोड़े हैं। इनकी अपेक्षा सातवीं नारकी के नेरीये दक्षिण दिशा में असंख्यात गुणा हैं। इस दिशा में कृष्ण पाक्षिक जीव भी बहुत उत्पन्न होते हैं। सातवीं नारकी के दक्षिण दिशा के नेरियों की अपेक्षा छठी नारकी के पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा में नेरीये असंख्यात गुणा हैं और उनकी अपेक्षा छठी नारकी में दक्षिण दिशा के नेरीये असंख्यात गुणा हैं। सबसे उत्कृष्ट पाप करने वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच और मनुष्य सातवीं नारकी में उत्पन्न होते हैं जो थोड़े हैं। उनसे कुछ हीन हीनतर पाप करने वाले छठी पांचवीं आदि नारकियों में उत्पन्न होते हैं और वे उत्तरोत्तर अधिक हैं। इसलिए सातवीं नारकी के दक्षिण दिशा के नेरियों से छठी नारकी के पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा के नेरीये असंख्यात गुणा बताए हैं। इनकी अपेक्षा छठी नारकी के दक्षिण दिशा के नेरीये असंख्यात गुणा हैं। कारण जो ऊपर सातवीं नारकी के वर्णन में बताया है वही समझना। इसी तरह पांचवीं, चौथी, तीसरी, दूसरी और पहली नारकी में भी पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा में पूर्ववर्ती नारकी के दक्षिण दिशा के नेरियों से असंख्यात गुणा तथा उनसे दक्षिण दिशा के नेरिये असंख्यात गुणा कहना।

12. **प्रश्न** – पहली नारकी से सातवीं नारकी तक किस नारकी के नेरीये थोड़े हैं और किसके अधिक हैं?

उत्तर – सबसे थोड़े सातवीं नारकी के नेरीये हैं। उनसे छठी नारकी के नेरीये असंख्यात गुणा, उनसे पांचवीं नारकी के नेरीये असंख्यात गुणा यावत् पहली नारकी के नेरीये असंख्यात गुणा हैं।

ज्ञातव्य :-

जत्थ जलं तत्थ वणं –

यह सामान्य विधेयात्मक वाक्य है। जहाँ जल है, वहाँ वन हो सकता है। अर्थात् जल के अभाव में वन की कोई संभावना नहीं। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि जहाँ-जहाँ जल होगा, वहाँ-वहाँ वन होगा ही। प्रज्ञापना सूत्र के पद 2 में बादर अप्काय पर्याप्तक के स्थान और बादर वनस्पतिकाय पर्याप्तक के स्थान समान प्राय: बतलाये हैं। उनमें से अधिकांश स्थान बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय में भी बतलाये हैं।

पर इसका यह अभिप्राय नहीं है कि पानी के हर एक स्थान में ये जीव होंगे ही। क्योंकि ये जीव बादर नाम कर्म के उदय वाले जीव हैं, जिनके द्वारा परस्पर अवरोध-उत्पन्न होता है। अर्थात् एक हजार योजन की अवगाहना वाला मच्छ जिस क्षेत्र को अवगाहित करके रहेगा, वहाँ क्वचित् किंचित् पोलार आदि स्थान में पर्याप्त बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय आदि के स्थान मिल सकते हैं। अन्यथा वे वहाँ नहीं हो सकते।

हरी का त्याग करने वाला भी कच्चे पानी का त्यागी हो, यह अनिवार्य नहीं। यदि प्रत्येक कच्चे पानी में वनस्पति मानी जाय तब तो कच्चे पानी के सेवन करने वाले को हरी का त्याग हो ही नहीं पायेगा। अत: यह समझना चाहिए कि पानी के आधार से इन जीवों के अवस्थान की प्रधानता बताई गई है। पर प्रत्येक पानी में इन जीवों की नियमा नहीं हो सकती।

वनस्पति के लिए पानी की अनिवार्यता हो सकती है, किन्तु प्रत्येक पानी में वनस्पति की नियमा नही हो सकती।

छः काय का थोकड़ा (पन्नवणा सूत्र से)

क्रम	नाम द्वार	गोत्र द्वार	स्वभाव	वर्ण	संस्थान द्वार	भव द्वार (एक मुहूर्त्त में)	स्थिति द्वार	योनि द्वार	कुल कोड़ी
1	इन्द्र स्थावर	पृथ्वीकाय	कठोर	पीला	मसूर की दाल	पृथ्वी., अप्., तेउ. , वायु. वन., बेइ., तेइ., चउ. जीवों में 1 मुहूर्त्त में क्षुल्लक भव 256 आवलिका के 65536 तक हो सकते हैं। असन्नी पंचेन्द्रिय, सन्नी पंचेन्द्रिय में लगातार 8 भव से अधिक होने का निषेध है।	22000 वर्ष	7 लाख	12 लाख
2	ब्रह्म स्थावर	अप्काय	शीतलता	लाल	पानी के बुलबुले		7000 वर्ष	7 लाख	7 लाख
3	शिल्प स्थावर	तेऊकाय	उष्ण	सफेद	सुई की नोंक		3 अहोरात्रि	7 लाख	3 लाख
4	सम्मति स्थावर	वायुकाय	बाजना	हरा	ध्वजा पताका		3000 वर्ष	7 लाख	7 लाख
5	प्राजापत्य स्थावर	वनस्पति काय	नाना प्रकार	काला	नानाप्रकार		10,000 वर्ष	24 लाख	28 लाख
6	जंगमकाय	त्रसकाय	नाना प्रकार	नाना प्रकार	नानाप्रकार		बे.12 वर्ष ते.49 अहोरात्रि चौ.6 माह नारकी-देवता ज.10 हजार उ.33 सागर. ति.पं., मनु.- ज.अं.मु. उ. 3पल्योपम	बे.2 लाख ते.2 लाख चौ.2 लाख नारकी- 4 लाख देवता- 4 लाख ति.पं.- 4 लाख मनु.- 14 लाख	बे. 7 लाख ते. 8 लाख चौ. 9 लाख नारकी 25लाख देवता 26 लाख ति.पं. 535 लाख मनु. 2 लाख

अल्प-बहुत्व : सबसे थोडे त्रसकाय, उससे तेऊकाय असंख्यात गुणा, उससे पृथ्वीकाय विशेषाधिक, उससे अप्काय विशेषाधिक, उससे वायुकाय विशेषाधिक, उससे वनस्पतिकाय अनंतगुणा।

ज्ञातव्य :-

1. इस थोकड़े में दी गई भवों की संख्या भगवती श. 8, उद्दे. 9, भगवती शतक-24 (गमा), जीवाभिगम सूत्र की सातवीं अष्टविध प्रतिपत्ति, पाँचवें कर्मग्रन्थ की गाथा 40-41, अभिधान राजेन्द्र कोष आदि के आधार पर दी गई है। इससे स्पष्ट है कि क्षुल्लक भव औदारिक के दस ही दण्डकों में हो सकते हैं।
2. आवश्यक सूत्र की निर्युक्ति पर आचार्य हरिभद्रसूरि द्वारा लिखी गई टीका में एक मुहूर्त्त में पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय व वायुकाय इन सभी के 12824 भव तथा सूक्ष्म वनस्पति के 65536 भव, साधारण वनस्पति के 32000 भव, प्रत्येक वनस्पति के 16000 भव, बेइन्द्रिय के 80 भव, तेइन्द्रिय के 60 भव, चतुरिन्द्रिय के 40 भव, असन्नी पंचेन्द्रिय के 24 भव तथा सन्नी पंचेन्द्रिय का 1 भव बतलाया गया है।
3. 1 मुहूर्त्त में 65,536 भव एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौरेन्द्रिय में जघन्य स्थिति के हो सकते हैं। तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य में तो लगातार 8 भव से अधिक नहीं हो सकते हैं। (गमा का अधिकार तथा उत्तराध्ययन 10/13)
4. औदारिक के दस दण्डक (पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, असन्नी-सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और असन्नी-सन्नी मनुष्य) के जीवों की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त होती है। थोकड़े में जो स्थिति बतलाई गई वह उत्कृष्ट है।
5. **योनि** :- जीवों के उत्पत्ति-स्थान को 'योनि' कहते हैं। अथवा जो जीव उत्पत्ति के समय तैजस-कार्मण शरीर को जिस शरीर के साथ मिश्रित करता है, उसे भी योनि कहते हैं। नरक, देव गति में वैक्रिय शरीर के साथ तथा मनुष्य, तिर्यंच गति में औदारिक शरीर के साथ मिश्रित करता है। (प्रज्ञापना सूत्र 9 वाँ पद की टीका)
6. **कुल** :- एक उत्पत्ति स्थान में अनेक प्रकार के जीव पैदा होते हैं, उसे 'कुल' कहते हैं। जैसे- गाय, भैंस आदि के गोबर में लट, गिंडोला, बिच्छु आदि अनेक जीव पैदा हो सकते हैं।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा :छठीं – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1=(10)

(a) मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का अधिकतम बंध है-
(क) 70 सागर (ख) 1000 सागर
(ग) 100 सागर (घ) इनमें से कोई नहीं (घ)

(b) निम्न प्रकृति की उत्कृष्ट स्थिति विशुद्ध परिणामों में बंधती है-
(क) तिर्यंचायु (ख) मनुष्यायु
(ग) देवायु (घ) तीनों ही (घ)

(c) 20 कोटाकोटि सागर का बन्ध होने पर अबाधाकाल होगा -
(क) 2000 महिना (ख) 2000 वर्ष
(ग) 2000 सागर (घ) कोई नहीं (ख)

(d) आयु का बंध निम्न परिणामों में होता है-
(क) जघन्य (ख) उत्कृष्ट
(ग) मध्यम (घ) कोई नहीं (ग)

(e) आयु बंध करने में काल लगता है-
(क) 1 मुहूर्त्त (ख) एक प्रहर
(ग) अन्तर्मुहूर्त्त (घ) कोई नहीं (ग)

(f) प्रथम गुणस्थानवर्ती सन्नी जीव कम से कम बंध करता है-
(क) 1 सागर (ख) 25 सागर
(ग) 50 सागर (घ) अन्तःकोटाकोटि सागर (घ)

(g) कांक्षा मोहनीय कर्म है-
(क) मिथ्यात्व मोहनीय (ख) समकित मोहनीय
(ग) मिश्र मोहनीय (घ) उर्पयुक्त सभी (घ)

(h) 98 बोल की अल्पबहुत्व तभी संभव है, जब जीवों की संख्या हो-
(क) जघन्य (ख) मध्यम
(ग) उत्कृष्ट (घ) संख्या पर निर्भर नहीं (ग)

(i) सबसे थोड़े हैं-
(क) नारकी (ख) तिर्यञ्च
(ग) मनुष्य (घ) देवता (ग)

(j) कम से कम विरह सम्भव है-
(क) 1 माह का (ख) 2 माह का
(ग) 1 समय का (घ) अन्तर्मुहूर्त्त का (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) पन्नवणा सूत्र के 23वें पद में विरह द्वार का थोकड़ा है। (नहीं)

(b) पृथ्वीकाय का जघन्य विरह 1 समय है। (नहीं)

(c) चारों गतियों का उत्कृष्ट विरह 24 मुहूर्त्त है। (नहीं)

(d) पूर्व दिशा भाव दिशा है। (नहीं)

(e) पन्नवणा सूत्र के आधार से छः काय का थोकड़ा है। (हाँ)

(f) 'अप्काय' ब्रह्म स्थावर है। (हाँ)

(g) शिल्प स्थावर का स्वभाव कठोर है। (हाँ)

(h) जंगमकाय का वर्ण नाना प्रकार का है। (हाँ)

(i) सभी प्रकृतियों का जघन्य स्थिति बंध विशुद्ध परिणामों में होता है। (नहीं)

(j) ईर्यापथिक सातावेदनीय का बंध सन्नी पंचेन्द्रिय ही करते हैं। (हाँ)

प्र.3 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a) मैं कर्म बन्ध के पश्चात् फल नहीं देने की अवस्था हूँ। अबाधाकाल

(b) मैं पीला स्थावर हूँ। पृथ्वीकाय

(c) मेरी कुलकोड़ी 3 लाख हैं। शिल्प स्थावर/ तेउकाय

(d) मैं नाना प्रकार के आकार वाला स्थावर हूँ। प्राजापत्य/ वनस्पतिकाय

(e) मुझमें जीव उत्पन्न होते हैं। योनि

(f) 98 बोल की अल्पबहुत्व में मेरा नम्बर 74वाँ है। अभवी जीव

(g) 98 बोल की अल्पबहुत्व में मेरा नम्बर 92वाँ है। मिथ्यादृष्टि

(h) मेरा अधिकतम विरह 15 दिन है। नवीनसाधु/तीसरी नरक

(i) मेरा अधिकतम विरह पल्योपम का संख्यातवाँ भाग है। सर्वार्थसिद्ध विमान

(j) मेरा अधिकतम विरह 100 अहोरात्रि है। 8वाँ देवलोक

प्र.4 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। **8x2=(16)**

(a) पहली नरक में जीव के भेद 3 लिये हैं, क्यों ?

उ. नारकी में सन्नी पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त-पर्याप्त जीव तो होते ही है तथा असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्त जीव भी मरकर पहली नारकी, भवनपति तथा वाणव्यन्तर देवों में जाकर उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसे जीव अपर्याप्त अवस्था में कुछ समय असन्नी रहते हैं, इस अपेक्षा से असन्नी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्त भेद भी माना जाता है।

(b) 98 बोल में से कोई दो अशाश्वत बोल लिखिए।

उ. 98 बोलों में कुछ बोल अशाश्वत भी हैं, जैसे-24वाँ-विरह की अपेक्षा, 95वाँ-श्रेणि में विरह की अपेक्षा, 97वाँ-14वें गुणस्थान में विरह की अपेक्षा।

(c) 45वें बोल में गुणस्थान, योग, उपयोग व लेश्या लिखिए।

उ. गुणस्थान 1 योग- 2 उपयोग- 4 लेश्या- 3

(d) वासुदेव का जघन्य तथा उत्कृष्ट विरह लिखिए।

जघन्य 2,52,000 वर्ष, उत्कृष्ट- देशोन 20 कोड़ा कोड़ी सागरोपम

(e) 9वें ग्रैवेयक का जघन्य तथा उत्कृष्ट विरह लिखिए।

उ.	9वें ग्रैवेयक पहली त्रिक (1-3)	जघन्य 1 समय	उत्कृष्ट संख्यात सैकड़ों वर्षों का
	9वें ग्रैवेयक दूसरी त्रिक (4-6)	जघन्य 1 समय	उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्षों का
	9वें ग्रैवेयक दूसरी त्रिक (7-9)	जघन्य 1 समय	उत्कृष्ट संख्यात लाखों वर्षों का

(f) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत नहीं होते हैं ? क्यों ?

उ. सन्नी (गर्भज) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्कृष्ट विरह बारह मुहूर्त्त का होता है। उनकी अपर्याप्त अवस्था की स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त ही होती है। अपर्याप्त अवस्था की स्थिति से विरहकाल की स्थिति अधिक होने के कारण सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत नहीं हो सकते।

(g) छह माह का अधिकतम विरह किन-किनका है ?

उ. 1. 64 इन्द्रों का 2. सिद्ध भगवान का 3. सातवीं नरक का।

(h) देवता की कुल योनि तथा कोड़ी लिखिए।

उ. योनि- 4 लाख कोड़ी- 26 लाख।

प्र.5 निम्न जीवों के निम्न कर्मप्रकृति की बन्धने वाली जघन्य तथा उत्कृष्ट स्थिति लिखिए। 6x3=(18)

(a) एकेन्द्रिय - असातावेदनीय

उ. जघन्य-1 सागर का 3/7 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम।

उत्कृष्ट- एक सागर का 3/7 भाग

(b) बेइन्द्रिय - मनुष्य गति

उ. जघन्य- 25 सागर के 3/14 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम।

उत्कृष्ट- 25 सागर के 3/14 भाग की।

(c) तेइन्द्रिय - सूक्ष्म नामकर्म

उ. जघन्य- 50 सागर के 9/35 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम।

उत्कृष्ट- 50 सागर के 9/35 भाग की।

(d) चउरिन्द्रिय - कालावर्ण नामकर्म

उ. जघन्य- 100 सागर के 8/28 अथवा 20/70 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम।

उत्कृष्ट- 100 सागर के 8/28 अथवा 20/70 भाग की।

(e) संज्ञी पंचेन्द्रिय - संज्वलन लोभ

उ. जघन्य- अन्तर्मुहूर्त्त की

उत्कृष्ट- 40 कोटाकोटी सागरोपम की।

(f) समुच्चय जीव - यशःकीर्ति नामकर्म

उ. जघन्य- 8 मुहूर्त्त की

उत्कृष्ट- 10 कोटाकोटी सागरोपम की।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पक्ति में लिखिए : -(कोई 9) 9x4=(36)

(a) एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक मिथ्यात्व मोहनीय का उत्कृष्ट स्थिति बंध लिखिए।

उ. मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का एकेन्द्रिय 1 सागर का, बेइन्द्रिय 25 सागर का, तेइन्द्रिय 50 सागर का, चौरेन्द्रिय 100 सागर का, असंज्ञी पंचेन्द्रिय 1000 सागर का तथा सन्नी पंचेन्द्रिय 70 कोटाकोटि सागरोपम का उत्कृष्ट बन्ध करते हैं।

(b) असन्नी पंचेन्द्रिय के 6 संस्थान का उत्कृष्ट स्थिति बंध लिखिए।

उ. समचतुरस- 1000 सागर का 5/35

न्यग्रोध परिमण्डल- 1000 सागर का 6/35

सादि- 1000 सागर का 7/35

वामन- 1000 सागर का 8/35

कुब्ज- 1000 सागर का 9/35

हुण्डक- 1000 सागर का 10/35

(c) मनुष्य के चारों आयु का जघन्य तथा उत्कृष्ट स्थिति बंध लिखिए।

उ. नरकायु, देवायु - जघन्य -10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक।

उत्कृष्ट- 33 सागरोपम क्रोड पूर्व का तीसरा भाग अधिक।

तिर्यञ्चायु, मनुष्यायु - जघन्य -अन्तर्मुहूर्त्त।

उत्कृष्ट- तीन पल्योपम करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक।

(d) 98 बोल प्रथम तीन बोलों में योग व उपयोग लिखिए।

उ.

बोल	योग	उपयोग
सबसे थोड़े गर्भज मनुष्य	15	12
इनसे मनुष्यिनी संख्यात गुणी	13	12
बादर तेउकाय पर्याप्त असंख्यात गुणा	1	3

(e) 98 बोल में से बोल 32 से 37 तक के बासठिये को खुलासा लिखिए।

उ.

बोल	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
खेचर तिर्यंच पुरुष असंख्यात गुणा	2	5	13	9	6
खेचर स्त्री संख्यात गुणी	2	5	13	9	6
थलचर पुरुष संख्यात गुणा	2	5	13	9	6
थलचर स्त्री संख्यात गुणी	2	5	13	9	6
जलचर पुरुष संख्यात गुणा	2	5	13	9	6
जलचर स्त्री संख्यात गुणी	2	5	13	9	6

(f) 98 बोल में बोल 53 से 58 तक के बासठिये को खुलासा लिखिए।

उ.

बोल	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय के पर्याप्त असंख्यात गुणा	1	1	1	3	3
बादर निगोद के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
बादर पृथ्वीकाय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
बादर अप्काय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
बादर वायुकाय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
बादर तेउकाय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3

(g) **98 बोल में 3 उपयोग वाले कोई छह बोल लिखिए।**

उ. **नोटः- 98 बोल के बासठिये में 3 उपयोग मिलने वाले कोई भी बोल पेज-50-51-52 से देखें।**

(h) **98 बोल में 4 लेश्या वाले कोई छह बोल लिखिए।**

उ. **नोटः- 98 बोल में 4 लेश्या वाले बोल पेज- 49-50-51-52 पर देखें।**

(i) **तिर्यंच पंचेन्द्रिय किस दिशा में न्यूनाधिक है ? कारण सहित लिखिए।**

उ. सबसे थोड़े पश्चिम दिशा में है। कारण यह है कि पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन का गौतम द्वीप है। इसलिये पश्चिम दिशा में अप्काय के जीव थोड़े हैं और इस कारण तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के जीव थोड़े हैं। पूर्व दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। पूर्व दिशा में गौतम द्वीप नहीं है, इस कारण अप्काय अधिक है और इसलिए तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के जीव विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में चंद्र सूर्य के द्वीप नहीं हैं, इसलिये अप्काय अधिक है और इसीलिये तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के जीव विशेषाधिक हैं। उत्तर दिशा में इनकी अपेक्षा विशेषाधिक हैं। कारण यह है कि उत्तर दिशा में संख्यात द्वीप समुद्र आगे जाने पर अरुणवर नामक द्वीप आता है। इस द्वीप में मानसरोवर नामक झील है जो संख्यात कोटाकोटि (कोड़ाकोड़ी) योजन लम्बी चौड़ी है। इस सरोवर के कारण उत्तर दिशा में अप्काय अधिक है और इसलिये तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के जीव विशेषाधिक हैं।

(j) **मनुष्य किस दिशा में न्यूनाधिक है ? कारण सहित लिखिए।**

उ. सबसे थोड़े दक्षिण और उत्तर दिशा में हैं। सब क्षेत्रों में भरत और ऐरवत क्षेत्र छोटे हैं उनमें मनुष्य थोड़े हैं, मनुष्य के वास थोड़े हैं, बादर तेउकाय थोड़ी है और वहाँ से थोड़े जीव सिद्ध होते हैं। इनकी अपेक्षा पूर्व दिशा में संख्यात गुणा हैं। पूर्वदिशा में पूर्व महाविदेह क्षेत्र बड़ा हैं। उसमें मनुष्य अधिक हैं, मनुष्य के वास अधिक हैं, बादर तेउकाय अधिक है और वहां से बहुत जीव सिद्ध होते हैं इसलिये पूर्व दिशा में संख्यात गुणा कहा है। इनकी अपेक्षा पश्चिम दिशा में विशेषाधिक है। पश्चिम दिशा में पश्चिम महाविदेह क्षेत्र है जिसमें सलिलावती एवं वप्रा विजय है जो एक हजार योजन गहरी (ऊंडी) तिर्छी है। वहां मनुष्य बहुत हैं, मनुष्य के वास बहुत हैं, बादर तेउकाय अधिक है और वहां से बहुत जीव सिद्ध होते हैं।